**वर्षा**

Arushi Sethi, 11

वर्षा हमेशा सुख लाती है,
और साथ ही दुख ले जाती है।
खेत-किसान की खुशी अगणित,
मिट्टी होती है संकलित।
मिट्टी की खुश्बू महकी,
सब पंछी संचित रहते
हरियाली की बौछार है,
खुशियों के त्यौहार हैं।
मच्छर भी अब राजमाता,
आकर हमको रात में काटता।
बच्चे अपनी नाव लेकर,
पानी में उन्हें फेंककर।
सभी जगह जल दिखता,
चटाके भरा खाना बिकता।
सभी के लिए यह खुशी का अवसर,
अपने घर में रहना अक्सर।
वर्षा हमेशा सुख लाती है,
और साथ ही दुख ले जाती है।

आकाश त्रिवेदी, कक्षा ८

**मेरी माँ**

Pankti Mashruwala, 9

मेरी माँ, प्यारी माँ, मम्मी माँ ।।
माँ मैं जब बीमार होती थी, तब
तुम मेरे पास बैठी रहती थी । या
खुदा । ये असर तेरी दुआ का है
मेरी माँ, प्यारी माँ, मम्मी माँ
।। तू हर वक्त मेरा ध्यान रखे,
जब तुम गुस्सा करती - मैं रोती
फिर तुम मुझे प्यार करती । मेरी
माँ, प्यारी माँ, मम्मी माँ ।।

आकृति झा, कक्षा ४

**अंतरिक्ष की सवारी**

Raina Kishor, 9

अंतरिक्ष की सवारी प्यारी
मुझे लगे सबसे न्यारी ।।
अंतरिक्ष में उ ान भरूँ मैं,
यान में बैठ के ज़ूमममममममम, , , , ,
निकली मैं, जा पहुँची मैं नील गगन में
सफर मेरी शून्यवकाश की। कठिन मगर सुंदर थी ।
अंतरिक्ष में जाकर देखा नीचे, प्यारी सी धरती माँ ।
हाथ फैलाकर बोली - सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा।।

आरुशी सेवक, कक्षा ४

**दीवाली**

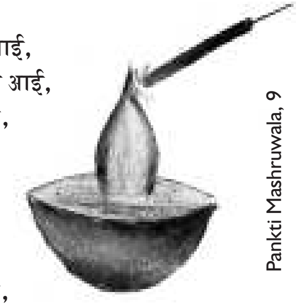
Pankti Mashruwala, 9

दीवाली आई, दीवाली आई,
दीया जलाने की दीवाली आई,
मिठाई एक दूसरे से बाँटे,
पटाखे हम खूब जलाए,
ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाए,
हँसी-खुशी से गीत गाए,
लक्ष्मी-पूजन खूब करें
दोस्तों को हम घर बुलाएँ,
स्कूल में बजी घंटी,
बच्चे दौड़े घर आए
दीवाली आई, दीवाली आई,
दीया जलाने की दीवाली आई।

आर्यमन शोधन, कक्षा ३

**गरीब लोग**

Preksha Patel, 4

गरीब लोगों की दुनिया अलग होती है ।
न कप ॆ, न मकान, रास्ते पे घूम रहें हैं।
वे भीख माँगते गरीब बच्चे रोते हैं। अपने
जन्मदिन में गरीब लोगो को खाना देता हूँ ।
वे रहते हैं झोप ी में, वे सर्दी में सिर्फ ओ ते हैं चादर ।
गरीब लोग, वे गरीब लोग ।।
गरीब लोगों की दुनिया अलग होती है ।
उनके ब्लैसिंग सुनते हैं भगवान ।

आर्यमन मेहता, कक्षा ३

**भारत**

पाप-पुण्य का यह भारत देश देखो
यहाँ का सुख-दुख देखो,
यहाँ भोर होते ही सूरज उदय होता है,
शाम होते ही अस्त होता है,
यहाँ राजा बड़ी शान से आगे कदम बढ़ाता है,
रंक बेचारा पीछे होकर अपने आँसू बहाता है।
यहाँ जन्म लेता सदाचारी,
बड़ा होकर बनता दुराचारी।
यहाँ हिंसा के हर निवाले पर
अहिंसा होनी चाहिए, चाहे वह हो नारी या नर,
यहाँ हर व्यक्ति को करना चाहिए अच्छा कर्म,
ना कि कोई निष्कर्म,
यहाँ कहीं ज़मीन उपजाऊ है
तो कोई बंजर,

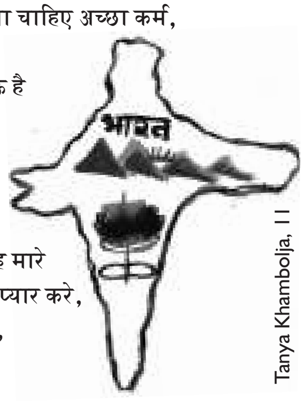

Tanya Khambolja, 11

यहाँ कोई दानव की तरह मारे
तो कोई मानव की तरह प्यार करे,
यहाँ राग-द्वेष अलग हैं,
पर सारे व्यक्ति एक हैं।

आस्था जैन, कक्षा ७

**मेरा बचपन**

ज़िन्दगी की सबसे बड़ी अनमोल चीज़,
है- मेरा बचपन।
नाचता और बदमाशी,
जो करता था मैं,
माँ-बापू को रुलाकर,
सोने भेजता मैं।

Sushant Sinha, 9

सुबह उठकर रोता-धोता,
भाई-बहिन को जल्दी उठाता,
रुआँसा सा हो जाता,
इच्छा पूरी न होने पर खूब रोता।
दोपहर में खाना खाने में तंग,
करता मैं सबको परेशान,
खाना पूरा न खाकर,
माँ को खूब दुखी करता।
शाम को रोज़ खेलने की आज्ञा लेता,
देर रात तक खेलकर आता,
बापू को खूब गुस्सा दिलाता,
माँ को खूब रुलाता।
देर रात तक टीवी देखता,
खूब सारा खाना लेता,
माँ को खूब परेशान करता,
भाई से अपना गृहकार्य करवाता।
आखिर में आईस्क्रीम की माँग
करता, न मिलने पर रोता था,
रो-रो कर सो जाता,
इस बचपन को बड़ा याद करता।

आयुष कुलश्रेष्ठ, कक्षा ८

**सैनिक पर कहानी**

Nishant Jain, 4

एक बार एक छोटा सा ल  का था । उसका नाम था चिन्टू । उसे अपने पर बहुत मान था । एक बार जब ताज होटल में हमला हुआ तो हमारे सैनिक की वीरता देखकर उसे अन्दर से विचार आया कि-उसे ब` होकर सैनिक बनना है । उसने अपनी माँ को बताया तो वह बोली, तुम्हें पता है सैनिक होकर क्या-क्या करना प  ता है ? वे लोग तो देश के लिए अपनी जान भी दे देते हैं, तो क्या तू भी अपनी जान दे देगा ? चिन्टू बोला - "हाँ माँ मैं भी अपनी जान दे दूँगा, देश के लिए ।।"

आयुष सोलंकी, कक्षा ४

**माता-पिता की छत्र छाया**

Arushi Sethi, 11

हाज़िर माता-पिता की छत्रछाया में,
स्नेह के दो शब्द बोलकर देख लेना।
जब होंठ आधे बंद हो जाएँ,
फिर गंगाजल रखकर क्या करना---।
अंतर का आशीर्वाद देने वाले को,
सच्चे हृदय से लगा एक पल भेंट लो,
जब हाज़िर न होंगे तब नतमस्तक,
उनकी छवि को नमन क्यों करना---।

काल की थपाट लगकर अलविदा वे हो जाएँगे,
प्रेम से हाथ आप पर फिर कभी न फिरेगा।
लाख उपाय करने पर भी वात्सल्य कभी नहीं मिलेगा,
फिर दीवार पर तस्वीर लटकाकर क्या करना ---।
माँ-बाप का खज़ाना भाग्यशाली को मिलता है,
अड़सठ तीरथ उनके चरणों में और न घूमो।
स्नेह से भरे आकर जाएँगे एक पल में,
फिर किनारे पर बैठ सीप क्यों इकट्ठा करना---।
हाज़िर हों जब वे हृदय उनका ठंडा रखना,
पतझड़ में वसंत आए ऐसा व्यवहार रखना।
पंचभूत में मिलने के बाद,
अस्थि को गंगा में विसर्जित करके क्या फायदा---।
श्रवण बनकर बुढ़ापे की लाठी बनना
स्नेह से हाथ पकड़कर चारों धाम फिरना
मातृदेवो भव, पितृदेवो भव, ध्रुव सत्य है,
फिर राम नाम सत्य बोलकर क्या करना---।
पैसा खर्च करने से सब मिलता है, माँ बाप नहीं मिलेंगे
गया समय नहीं आएगा, लाख कमाकर क्या करना,
प्रेम से हाथ फेरकर बेटा कहने वाला नहीं मिलेगा,
फिर उधार के प्रेम लेकर आँसू बहाने का क्या फायदा---।

आदित्य चालिसहज़ार, कक्षा ८

**पेड़-पौधे**

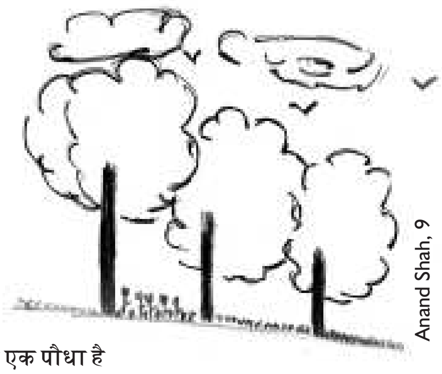

Anand Shah, 9

पेड़ एक पौधा है
पौधा पेड़ का मित्र है,
चिड़ियाँ उसमें बैठती हैं,
पर पेड़ को लगता है,
पेड़ पौधे हमारे मित्र है,
हम उससे फल लेते हैं,
पेड़ पौधों में, फल व फूल उगते हैं,
वो प्रकृति का एक भाग हैं,
पूरी दुनिया उनको प्यार करती है।

अमन शाह, कक्षा ३

**प्रकृति**

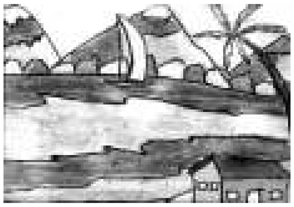

Kanhai Patel, 8

देखो फूल खिल रहे हैं।
देखो कलियाँ झूम रही हैं ।
सूरज मामा बोल रहे हैं।
देखो तितलियाँ गा रही हैं ।
देखो सावन आ रहा है,
ज़ोर-ज़ोर से बरस रहा है।
चिड़िया चूँ-चूँ कर रही है।
देखो गलियाँ गूँज रही हैं।
देखो फूल खिल रहे हैं।
देखो कलियाँ झूम रही हैं।

अनाहिता रंगटा, कक्षा ३

**महाभारत**

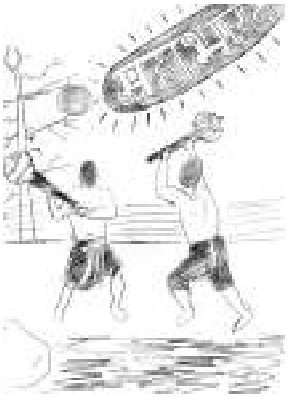

Manthan Grover, 11

वह कौन सा है पात्र
जो है महाभारत में खास
क्या करें, हर किसी में एक अलग विशेष बात।

हर किसी के जीवन में एक अलग नवीनता है
और क्या कहें, कुछ में तो सम्मोहित करने की गजब क्षमता है।

हर पात्र एक दूसरे से भिन्न है,
कभी-कभी एक दूसरे से बहुत खिन्न हैं।
सभी धर्म और अधर्म की डोर से बँधे हैं,
और एक साथ कुरुक्षेत्र में खड़े हैं।
द्वापर युग में कलयुग का साथ लिए,
कहीं न कहीं, कभी न कभी अपना स्वार्थ हाथ लिए।
जो धीरे-धीरे बढ़ता है तो महाभारत बनता है।
महाभारत की कहानी है मान की सम्मान की,
अभिमान की कल्याण की।

कहीं गीता के ज्ञान की और कृष्ण के अपमान की,
शकुनि की चाल की, कर्ण की हुँकार की,
द्रौपदी के चीर की और अर्जुन के गाँडीव की,
भीष्म की प्रतिज्ञा की, दुर्योधन की महत्वाकांक्षा की,
यहाँ भाई-भाई के बच्चों पर अन्याय कर जाते हैं,
और ब्रह्माण्ड के नायक सारथी बन जाते हैं,
और ब्रह्म स्वरुप दिखला जाते हैं।
अभिमन्यु नहीं निकल पाता है चक्रव्यूह से,
और युधिष्ठिर हार गया द्यूत में,
दुर्योधन का है बोलबाला,
और भीष्म को बाणों पर लिटा डाला,
कर्ण है सच्चा पर दोस्ती में बँधा,
विदुर को है ज्ञान पर बाकी सब है अज्ञान,
गाँधारी ने बाँध ली है आँखों पर पट्टी,
बाकी की आँखें खुली हैं पर हिम्मत है कच्ची,
संजय के चक्षुओं से धृतराष्ट्र ने सब कुछ देख लिया।
और पुत्र प्रेम ने उनको सम्मोहित कर दिया।
कहीं जला लाक्षागृह
और कहीं मिला अज्ञातवास
फिर भी बुझी नहीं उनकी प्यास
द्रोण भी हो गए चाल में शामिल
और शिखंडी को मिल गई अपनी मंज़िल
सभी की प्रतिज्ञा पूरी हुई
पर इस से क्या हुआ हासिल
अश्वत्थामा आज भी घूमते हैं शांति की खातिर
अपने हुए अपनों के खून के प्यासे
धर्म की जीत हुई, अधर्म की हार
महाभारत में कई गए स्वर्ग सिधार।

अनामिका शर्मा, शिक्षिका

**पेड़**

पेड़ों पर हरियाली छाई,
रंग-बिरंगे फूल हैं खिले,
देखो कितनी प्यारी लगती,
पत्तों पर पानी की बूँदे,
मोती सी लगती प्यारी,
पेड़ों के संग बढ़ना है,
पेड़ों के संग खिलना,
इसे मत कटने दो भाई,
पेड़ हमारा जीवन है।

Anand Shah, 9

अनन्या राजगढ़िया, कक्षा २

**मेरा देश**

मेरे देश में कई प्रदेश
सब हरे-भरे,
प्रदेशों में पे हरे
मेरा देश है
प्यारा, दुलारा
सबको लगे न्यारा
या सिर्फ मुझे ?

Anand Shah, 9

अंजली सबनिस, कक्षा ४

**कर्ज़**

माता के बाद, भगवान से पहले ,
जो जगह दिलों में पाते हैं।

कैसे चुकाएं कर्ज उनका,
जो पत्थर को हीरा बनाते हैं।

न मन में कोई छल कपट,
न कोई स्वार्थी आशा।

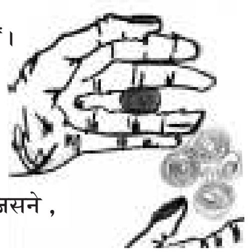

Arushi Sethi, 11

कच्ची मिट्टी को लाकर जिसने ,
मूर्तियों सा तराशा।

अपना आज दाँव पर लगा कर ,
हमारा कल सजाते हैं।

एक ज़माना था कि गुरु-दक्षिणा में,
अँगूठा काटना भी बड़ी बात न थी।

घृणा, द्वेष, अनादर की भावना,
सच्ची श्रद्धा के साथ न थी।

फिर आज हमारी बातों में ,
क्यों उस ध्येय की ललक नहीं।

और हमारी आँखों में,
उस आदर की झलक नहीं।

खड़ी करें आदर्श गुरु-शिष्य की मिसाल,
हम कसम आज यह खाते हैं।

फिर भी न चुका पाएगें कर्ज़ उनका,
जो पत्थर को हीरा बनाते हैं।

अंकिता पारिख, शिक्षिका

### माता-पिता और अध्यापक

Sushant Sinha, 9

एक ल  का था । उसका नाम था केविन । वह कभी भी अध्यापक और माता-पिता का कहना नहीं मानता । जब वह स्कूल से आता तब वह खेलने चला जाता और आकर टी.वी. देखने लग जाता और अपना गृह-कार्य कभी भी नहीं करता । फिर स्कूल में हर रोज़ अध्यापिका से डाँट प  ती । धीरे-धीरे उसकी परीक्षा नज़दीक आ गई, फिर भी वह खेलता ही रहा । फिर दो दिन उसकी परीक्षा होने वाली थी, वह स्कूल गया तो पता चला कि-उसी दिन उसकी परीक्षा थी । तब केविन चिंतित हो गया, फिर वो प  ने लगा । पर दो-दो मिनट पर पानी पीने चला जाता । फिर वह दूसरे दिन स्कूल गया, तभी उसके अध्यापक ने उसे परीक्षा का कागज़ दिया । तब भी उसको शून्य मिला । तब उसने अपने माता-पिता से क्षमा माँगी और फिर वह अच्छा बच्चा बन गया ।

अंश पटेल, कक्षा ४

### विद्यालय

Sushant Sinha, 9

एक बार एक विद्यालय था । उसमें बहुत सारे बच्चे प  ते थे । वहाँ बच्चों को प  ना बहुत अच्छा लगता था । उधर एक ब  ा सा बगीचा भी था । बच्चों को विद्यालय आना, खेलना और खाना बहुत अच्छा लगता था । उस विद्यालय का नाम एकलव्य स्कूल था, जो अहमदाबाद में था । उधर बहुत सारी तितलियाँ भी मंडराती थीं । एक था विद्यालय ब  ा निराला बच्चे आयें खाने और पीने - आओ बच्चों चलें विद्यालय में ।

अंशिता अग्रवाल, कक्षा ३

### अगर मैं जंगल में खो गया होता

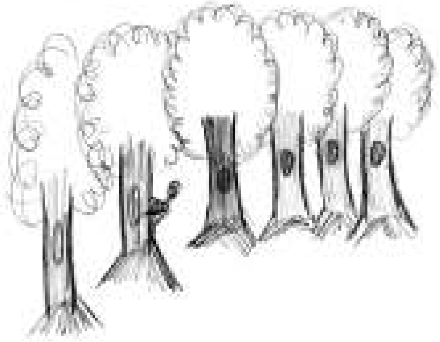

Raina Kishor, 9

अगर मैं जंगल में खो गया होता तो मैं अपने माता-पिता को बहुत याद करता । अगर जंगल में मैं खो जाता तो मैं पहले अपना घर बना लेता, जहाँ पर जंगली जानवर से बच सकता हूँ और बाद में रात को सो जाऊँगा । बाद में सुबह छः या सात बजे उठ जाऊँगा और सुबह की अच्छी हवा में आगे ब ूँगा । रास्ते में मैं बहुत सारे जानवर देखूँगा, पर मैं ध्यान से चलूँगा और मैं जानवर को अपने दूरबीन से देखूँगा । बाद में मैं चलता रहूँगा और आखिरकार मैं अपने घर पहुँच जाऊँगा और मैं अपने माँ को बोलूँगा कि, मुझे बहुत-बहुत मज़ा आया ।।

अंश गजरावाला, कक्षा ४

### माँ

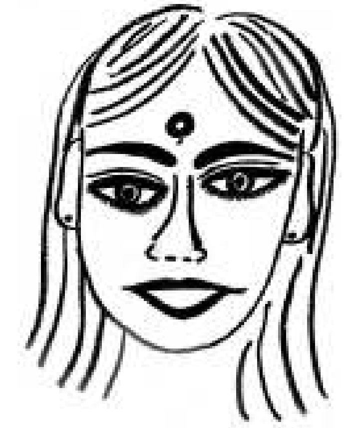

Arushi Sethi, 11

कौन है सबसे प्यारी, जो कहती है मुझे न्यारी,
कभी न कहती मुझे ना, वो है मेरी प्यारी माँ।

हमेशा रहती मेरे साथ, जब गिरूँ तो देती अपना हाथ,
खुश होती जब करूँ कुछ नया काम।

दुख होता जब करूँ बुरा काम, रेखा प्यारी माँ का नाम।

अंशु नागपाल, कक्षा ४

**फिर क्या करोगे ?**

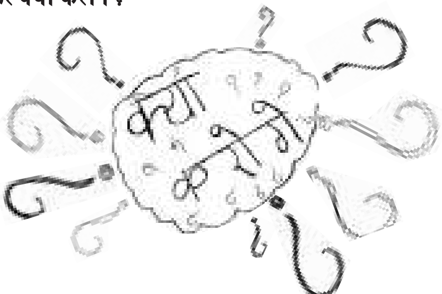

Manthan Grover, 11

जिन्दा माता-पिता की छत्र छाया में,
उनसे प्यार के दो मीठे बोल बोल कर तो देखो।
होठ बंद हो जाने के बाद ,
गंगाजल, पवित्र मानकर , होठों पर लगाकर क्या करोगे।

प्रेम से आशीर्वाद देने वालों को,
एक बार प्यार से गले तो मिलो।
जब ज़िंदा नहीं होंगे तब अपना सिर
उनकी तस्वीर के सामने झुकाकर क्या करोगे ?

हर व्यक्ति के जीवन में बुरा समय आता है,
परन्तु, तब तुम्हारे सिर पर हाथ घुमाने वाला नहीं होगा।
लाखों हज़ारों कोशिश कर लो , परन्तु तब वह नहीं आएगा,
फिर घर में उनकी तस्वीर लगाकर क्या करोगे ?

माता-पिता का खज़ाना, सिर्फ भाग्यशाली संतानो को प्राप्त होता है,
उनके चरणों में ही सारे तीर्थ बसे हैं,
प्रेम भरी लहरें ज़िन्दगी में आकर चली जाती हैं,
बचे खुचे सामानों, भावनाओं को इकट्ठा करके क्या करोगे ?

ज़िन्दा रहने पर उनके हृदय में शान्ति बनाओ,
वसंत में भी बारिश का एहसास बना सको, ऐसा व्यवहार करो।
पृथ्वी के पंचभूतों में मिलने के बाद, शरीर की अस्थियों को,
गंगा में बहाकर क्या करोगे ?

श्रवण कुमार जैसे माता पिता का सहारा बनो,
प्रेम से हाथ पकड़कर सारे तीर्थ घुमाओ।
मातृ देवो भवः पितृ देवो भवः वैश्विक सच है,
परन्तु, मृत्यु पर राम नाम सत्य है बोलकर क्या करोगे।

आधुनिक काल में पैसे से सब मिलता है, परन्तु माता पिता का स्नेह नहीं,
समय कभी वापस न आएगा, चाहे लाख रुपए कमा लो।
प्रेम से सिर पर हाथ घुमाकर, प्रेम से बेटा बुलाने वाले फिर नहीं रहेंगे,
तब उधार का प्रेम बोलकर, आँसू बहाकर क्या करोगे।

अंतरा गांगुली, कक्षा ९

**पतझड़ कालीन**

Vidhi Shah, 9

जब पत्तों की बारिश होती है,
पतझड़ कालीन आती है।
अक्टूबर में आती है,
ठंड से पहले आती है।
जब पत्तों की बारिश होती है,
अपने साथ सुख लाती हैं
आजू-बाजू पत्ते फैलते हैं,
साथ-साथ गंदगी फैलाते हैं।
जब हम सुबह को स्कूल आते हैं,
इन पत्तों की चादर को देखकर,
अपना मन बहलाते हैं।
जब पत्तों की बारिश होती है,
हम हमारी स्कूल साफ करते हैं।
अपने आप को खाली करते हैं,
बड़े-बड़े पेड़ अपने पत्ते गिराते हैं।
पतझड़ कालीन खुशियाँ लेकर आती है।
सबके दिलों को छूकर जाती है।

अनुज देसाई, कक्षा ८

**एकता**

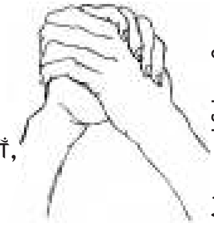
Asimanand Sahoo, 9

रंगबिरंगे फूल खिले हैं यहाँ,
गुलाब, मोगरा, चमेली का जहाँ,
अलग-अलग हैं यह महकते,
गुलदस्ता हार में साथ सजते,
अलग शहर यहाँ, अलग डगर यहाँ,
साथ साथ रहते मगर हम यहाँ,
बोली अलग, भाषा अलग, लोग न्यारे,
गान हमारे एक, हम सब पुकारे,
सारे जहाँ से अच्छा, हिन्दोस्तां हमारा
विविधता में है एकता हमारी ।

अनमता शेख़, कक्षा ४

**कव्वाली**

Sushant Sinha, 9

एकलव्य परिसर की एक दास्तान सुहानी
Educator और students की, आ---
Educator और students की, सुन लो तुम ज़ुबानी।
एकलव्य परिसर की एक दास्तान सुहानी
Students
हर रोज़ दें ये home-work, आ---
हर रोज़ दें ये home-work, ऊपर से copy-writing
गर साथ हो कोई project
गर साथ हो कोई project, याद आए हमको नानी।
एकलव्य परिसर की एक दास्तान सुहानी
Educators
पढ़ना भी एक कला है, आ---
पढ़ना भी एक कला है, इसकी बड़ी है ताकत।
हस्ती बड़ी बनोगे
हस्ती बड़ी बनोगे, कीमत जो इसकी जानी।
एकलव्य परिसर की एक दास्तान सुहानी।
Students
दाल, rice, सब्जी, रोटी
दाल, rice, सब्जी, रोटी ही lunch में मँगाते
हर दम ये साथ रहकर पूरा finish कराते
Free food day की सोचते
Free food day की सोचते ही मुँह में आए पानी
एकलव्य परिसर की एक दास्तान सुहानी।
Educators
हर रोज़ जो खाओगे, आ---
हर रोज़ जो खाओगे, तुम ये heavy खाना
पुदीन हरा लेकर, sick room पड़ेगा जाना
इस fast food से बच्चों
इस fast food से बच्चों, होगी ये परेशानी।
एकलव्य परिसर की एक दास्तान सुहानी।
Students
यूँ तो sports period, आ---
यूँ तो sports period, में हमको मज़ा है आता
पर rounds का ये system हमको नहीं है भाता,
गर rounds हम न भागें
गर rounds हम न भागें, तो पड़ती है डाँट खानी।
एकलव्य परिसर की एक दास्तान सुहानी।
Educators
बच्चों हमें पता है, आ---
बच्चों हमें पता, क्या है तुम्हारे मन में
पर तुम जो rounds भागो, तो स्फूर्ति आए तन में,
मेहनत तो करनी होगी
मेहनत तो करनी होगी, क्योंकि सेहत भी है बनानी।
एकलव्य परिसर की एक दास्तान सुहानी।

अर्चना विश्वकर्मा, शिक्षिका

**सरकस**

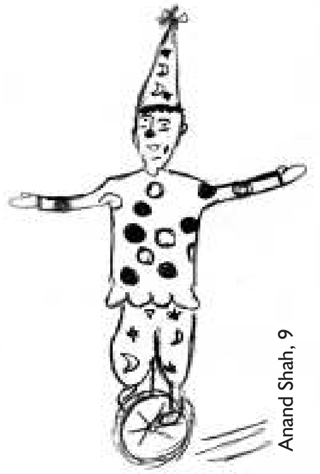
Anand Shah, 9

हाँ तो साहेबान, मेहरबान, कदरदान,
मेरे बहिन, भाई, बच्चे, बूढ़े और जवान।
आया सरकस उत्तर से दक्षिण में,
अचम्भित करने आपको साहेबान।
चलता यह सुबह शाम,
कोई सरकस में हँसे, कोई रोए,
या सरकस में जोकर हो या जोकरानी,
सब हमें हँसवाएँ
अब मेले में हों हाथी अथवा हथिनी,
सब करते कलाबाजी हमको अचम्भित करने वाली।
यहाँ कलाकार और कलाकारनी,
कूदते ऊपर और नीचे।
आइएगा इनको देखने,
एक टिकट दो रुपए में,
बिके और आए हँसी इनकी चखने।

अतिशय अग्रवाल, कक्षा ७

## जल ही जीवन है।

Pankti Mashruwala, 9

जल एक बहुत ही महत्वपूर्ण चीज़ है। इससे ही हमारे रोज़ के बहुत से काम होते हैं। ऊपर से जल की वजह से ही हम ज़िन्दा हैं।

जल के बहुत से उपयोग हैं जैसे पानी पीना, कपड़े धोना, वनचर धोना आदि। इन कर्मों की पूर्ति के लिए जल बहुत आवश्यक है क्योंकि पानी के बिना हम ज़िंदा ही नहीं रहेंगे। सिर्फ साबुन से कपड़े नहीं धोए जा सकते और वनचरों को धोने के लिए तालाब जैसे स्त्रोत की आवश्यकता है।

जल के बहुत से स्त्रोत हैं जैसे नदी, तालाब, समुद्र आदि।पीने लायक पानी के बहुत कम स्त्रोत रह गए हैं, क्योंकि मानव जाति ने बाकी के स्त्रोतों को गंदा कर दिया है। पूरे विश्व के पानी में से 97.41% पानी नमकीन है। जो 2.59% पीने लायक पानी है उसमें से 1.954% पानी बर्फ के रूप में जमा हुआ है। अब बचा 0.632% जो नदियों और तालाबों और ज़मीन के नीचे पाया जाता है। सिर्फ 0.014% मानव जाति इस्तेमाल कर रही हैं। जल की कमी का कारण मानव जाति ही है इसलिए हमें जल का सदुपयोग करना चाहिए।

जल बचाने के लिए मानव ने बहुत से तरीके ढूँढे हैं जैसे नहाते समय शावर पाँच मिनट से ज्यादा नहीं चलाना, कपड़े धोने के लिए एक बाल्टी पानी का उपयोग करना, वनचरों को जल-स्त्रोतों से दूर नहलाना आदि। पर यह तरीके तभी काम आएँगे जब हम पानी की कमी को महसूस कर पानी का सदुपयोग करेंगे।

भरत खंडेलवाल, कक्षा ७

## माता-पिता की देख-रेख

जीवित माता-पिता की देख-रेख में,
प्यार से शब्द बोल के खुशी अनुभव कर लेना,
ओष्ठ आधे बंद हो जाए,
फिर गंगाजल रख के क्या करोगे।

अंतर से आशीर्वाद देनेवाले को,
सच्चे मन से एक मिनट के लिए गले लगाओ,
वे नहीं होगें तब,
उनकी तस्वीर के सामने सर झुकाकर क्या करोगे।

ऐसा समय आएगा जब अलविदा वे हो जाएगें,
आशीर्वाद देनेवाला हाथ फिर कभी नहीं घूमेगा,
लाखों उपायों के बाद भी वह प्रेम नहीं मिलेगा,
फिर एक कोने में उनकी तस्वीर रखकर क्या करोगे।

माता-पिता का खज़ाना भाग्यशाली संतान को मिले,
अड़सठ तीर्थ उनके चरणों में, दूसरे तीर्थ नहीं घूमने
प्यार का मौसम आकर, एक पल में चला जाएगा,
फिर किनारे पर पत्थर ढूँढकर क्या करोगे।

ज़िंदा हो तब उनका मन खुशियों से भर दो,
पतझड़ में वसंत आए ,ऐसा व्यवहार रखना,
पंचभूत में शामिल हो जाने के बाद,
उनकी अस्थियों को गंगा में बहाकर क्या करोगे।
श्रवण बनकर बुढ़ापे की लकड़ी तुम बनना,
प्यार से हाथ पकड़कर, कभी तीर्थ पर ले जाना,
मातृ देवो भवः पितृ देवो भवः एकदम सत्य है,
फिर राम नाम सत्य बोलकर क्या करोगे।

पैसा खर्च करने से सब मिलेगा, माँ-बाप नहीं
मिलेंगे,
गुज़रा हुआ समय नहीं आएगा, लाखों कमाकर क्या
करोगे।
प्रेम से हाथ घुमा कर बेटा कहनेवाला नहीं मिलेगा,
फिर उधार का प्रेम लेकर, आँसू बहाकर क्या करोगे।

Asimanand Sahoo, 9

भूमि धनवानी, जाह्नवी पटेल, कक्षा १२

## ताजमहल

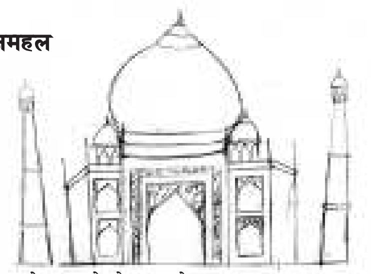

Vidhi Shah, 9

भारत देश करोड़ों का देश,
इसमें है विश्व प्रसिद्ध ताज,
जो गया वह खुश किस्मत है,
जो नहीं गया उसका क्या?
यह एक प्रेम का प्रतीक है,
जो शाहजहाँ ने बनवाया,
साथ में यह हिंदुस्तान का मजहब है,
जो माता-पिता ने हमको दिखलाया।
वह बहुत सुंदर महल है,
जो रात को चमकता है।
जब भी हम उधर जाएँ,
देखकर अपना मन बहकता है।
कितनी बड़ी है इसकी ऊँचाई,
चौड़ाई भी कुछ कम नहीं,
चार मीनार है आजू-बाजू,
गुम हो न जाएँ हम कहीं।

भूमि शाह, कक्षा ८

## नारी, प्रगति कर

Arushi Sethi, 11

नारी प्रगति कर, पर स्वधर्म
पथ से न उतर
दुष्कर्म त्याग, ले हाथ में
धर्म ढाल ।
विकारों के पर कुतर ,
निज रूप बदल , हे देवी ।
देवी सी निखर ।।

दिव्य समाज का सृजन कर, चहुँ ओर खुशी जो जाए बिखर
।।
सरलता, सादगी की बानगी में रहना,
वर्तमान के वर्धमान में विकारों से बचना,
निज रूप बदल , हे देवी। देवी सी निखर।

दिव्य गुणों से सुसज्जित रह, शुभ-भावना की दृष्टि से
उस नाम-मान की त्यागी बन, तब गरिमा पर जो ढाए कहर
बाँध के दृ  ता का कँगना, कर दे पावन कोना-कोना
निज रूप बदल, हे देवी। देवी सी निखर ।।

विघा, शक्ति, धन की हे देवी, निज शासन कर,
सुशासन कर ।
नहीं कामिनी हो, हो कल्याणी, सजो स्वमान के आसन
पर,
हे दुःखहरनी, हे सुखकरनी, हरण आज पी  ा का कर,
निज रूप बदल , हे देवी । देवी सी निखर ।

चारु दर, शिक्षिका

## समय व परिश्रम

Pankti Mashruwala, 9

समय है बहुत महत्वपूर्ण,
कल होना चाहिए परिश्रमपूर्ण।
अगर हो यह परिश्रमपूर्ण,
तो भविष्य होगा सफलतापूर्ण।
मेहनत करो सच बोलो,
सफलता के साथ हाथ में हाथ चलो।
जो कल न कर सके
वह आज करो, और
जो आज नहीं कर सके
उसे कल करो।
कुछ भी करो कर्म पूर्ण करो।
समय है बहुत महत्वपूर्ण,
कल होगा सफलतापूर्ण।

चित्रा वरडे, कक्षा ८

## देशभक्ति

Vidhi Shah, 9

याद करो उन लोगों को जिन्होंने लड़ी लड़ाई थी,
याद करो उस दिन को जब हमको मिली आज़ादी थी।
याद करो वह जख्म जो उन्होंने खाए थे,
याद करो उन लोगों को जिन्होंने लड़ी लड़ाई थी।
याद करो वह फाँसी का फंदा जिस पर चढ़े भगतसिंह,
याद करो वह वादे जो उन्होंने हमसे किए थे।
याद करो उन अंग्रेज़ों को जिन्होंने अत्याचार किए हम पर,
याद करो उन लोगों को जिन्होंने लड़ी लड़ाई थी।
याद करो वह संधि जिस पर गांधी बापू ने हस्ताक्षर करे,
याद करो उन लोगों को जिन्होंने लड़ी लड़ाई थी।

चित्रांशी सक्सेना, कक्षा ८

## दीवाली

Vidhi Shah, 9

दीवाली आई, दीवाली आई,
खुशियों की दीवाली आई।
नए कपड़े पहनकर मंदिर जाते,
लक्ष्मी जी की पूजा करते।।
किताबों की भी पूजा करते,
नए कपड़े पहनकर सबके घर जाकर।
साल मुबारक कहते।।
पटाखों को ना बोलते,
अच्छी मिठाई बनाते।
सबके घर जाकर बहुत मज़ा करते,
कुछ पटाखे मैं जलाता जो आसान होते।।

दर्शन पारेख, कक्षा ३

## प्रकृति

Anand Shah, 9

प्रकृति है सुहानी,
कहती है ये नानी।
सबसे है ये प्यारी,
लगती मुझको सबसे न्यारी।
सूरज, चाँद, चाँदनी, तारे
लगते हैं मुझको सबसे प्यारे।
सूरज जब निकला सवेरे,
तब निकले तितली और भँवरे।
सूरज ढलता जब शाम होती तब,
वापस लौटते लोग तब,
जब काम कर लेते सारा खत्म।
रात सुनहरी चाँदनी निकलती,
रोशनी सब को देती यह सुहानी,
जुगनुओं संग वो आती,
भर देती आकाश में रंग भाँति-भाँति।
यह है अपना प्रकृति चक्र,
होता है मुझको इसपे फक्र।
हमारी सुनहरी प्रकृति।

दर्शिता चौहान, कक्षा ७

## लालची बुढ़िया

Sushant Sinha, 9

एक गाँव में एक बूढ़ी औरत रहती थी।उसके पास एक मुर्गी थी।जो हर रोज सुबह चिल्लाती। एक दिन उसे लालच हुई, उसने सब पड़ोसी को बुलाया, फिर उसने कहा कि अगर मेरी मुर्गी सुबह न चिल्लाती तो सुबह न होती।जब पड़ोसी ने यह सुना तो वह हँसने लगे।बूढ़ी औरत दुखी हो गई।फिर बोली कि तुम्हें अगर यकीन नहीं हो रहा तो मैं उसके मुँह में रस्सी बाँध देती हूँ, रस्सी बाँधने के बाद कल सुबह नहीं होगी। रात हो चुकी थी पर बुढ़िया सोई नहीं थी। वह पूरी रात जागी। ६:30 को वह चौंक गई कि सुबह हो चुकी थी। फिर वह मुर्गी के पास गई तो मुर्गी मर चुकी थी।

देव पटेल, कक्षा ४

## इन्सान के कई रूप---

Arushi Sethi, 11

जैसे काँटों के बीच में फूल खिलते हैं।
वैसे इन्सानों के बीच में राम मिलते हैं।
जैसे समुद्र में कई शंख के बीच
एक मोती मिलता है।
वैसे हमारे बीच में हनुमान मिलते है।

जैसे काले बादलों के बीच में बिजली चमकती है।
वैसे हम में से ही एक कैकयी जन्म लेती है।
जैसे उन बादलों में से प्यारी बूंदें बरसती है।
वैसे कौशल्या और सीता का प्यार बरसता है।

एक ही इन्सान के कई रूप हैं
उनके कर्म, गुण, स्वभाव नीति आदि---
समय-समय पे उन्हें
अलग-अलग रूप में ढालते हैं।
जिसने यह समझ लिया
उन्होंने जीवन को समझ लिया।

धरा शेठ, शिक्षिका

## EXAM का भूत

Sushant Sinha, 9

Exam भूत बनकर आती है,
मिलकर हमें डराती है।
कभी Maths के Theoram बनकर आती है,
तो कभी Science के Defination बनकर हमें सताती है।
Books और Exam की है गहरी दोस्ती,
एक साथ बैठकर खाते चाट-पकौड़ी।
दिन-रात बच्चों के सपनों में आते,

उन्हें फेल हो जाने का डर महसूस करवाते।
Board Exam है बड़ा भाई Exam का,
Class 10th और 12th में यह रहता,
CBSE के बच्चे बच गए, Government ने,
निकाल दिया Board Exam को 10th से।
CBSE के बच्चों ने ली चैन की साँस,
ICSE की मदद करो कोई खास।
इस भूत को एक ही आदमी भगा सकता,
वह है Government का राजा।
अगर उसने निकाला Exam के डर को,
तो कितना फायदा होगा सोचो! सोचो!
काश कोई हमारी मदद कर पाए,
अपने अवतार के रूप में खोजो किसी को।

दीपानिता चैटर्जी, कक्षा ८

## नुक्कड़ नाटक

Arushi Sethi, 11

भाग एक
डमरू बजाते हुए-
Anouncer :- सुनिए-सुनिए मेहरबान, कदरदान, भाई, बहन, बूढ़े, बच्चे, जवान।। लाए है हम मनोरंजन की दुकान, एक बिंदास राहुल की दास्तान। तो हटने मत दीजिएगा ध्यान, चल शुरू हो जा मेरी जान।

विद्यालय से छुट्टी
मित्र एक-मनोज - आज तो स्कूल में बहुत मज़ा आया।
मित्र दो-राधा - हुँह, कहाँ का मज़ा, मेरा तो पूरा दिन पैच वर्क में गया।
मित्र तीन-राकेश - आज तो हमने अंग्रेज़ी की क्लास में बहुत जोक मारे।
मित्र चार-आकाश - हाँ यार, बहुत मज़ा आया।
मित्र पाँच-इशान - मुझे भी, मुझे भी, मुझे भी।
मित्र छह-मोहन - पँद्रह दिन रुक जाओ, मज़ा भी सज़ा बन जाएगी।जब परीक्षा आएगी।
मित्र सात-राहुल - जो पढ़े उसके लिए सज़ा, जो न पढ़े उसके लिए मज़ा-ही-मज़ा।
सब लोग चले जाते है---

भाग दो
राहुल घर पहुँचता है।
माता - आ गया मेरा लाल। नाश्ता लग गया है खाकर पढ़ाई कर।
पिता समाचार पत्र नीचे करके - पढ़ाई कर, पढ़ाई कर।
राहुल पढ़ाई छोड़ टी वी देखने लगता है।
माता टी वी बंद कर राहुल से - पूरा दिन टी वी, टी वी, टी वी, पढ़ाई कब करनी है? करनी भी है या नहीं? पता नहीं किन लोफरों के साथ घूमता है-पिता को-ये हमारे साहबजादे जो पढ़ने का नाम नहीं लेते और एक मोहन, जिसने कब से पढ़ाई शुरू कर दी है। अजी आप कुछ कहेंगे भी?
पिता समाचार पत्र नीचे करके-पढ़ाई कर, पढ़ाई कर।
राहुल-पर--
माता-चुप
राहुल-मैं तो--
माता-बस कह दिया।
राहुल-अरे मैं--
माता-जा पढ़ाई कर।
सब चले जाते हैं

भाग तीन
शिक्षक के साथ का दृश्य
Anouncer :-दूसरे दिन आए कक्षा में ,
करने पढ़ाई या हंगामे,
भूगोल की कक्षा में ,
चल गए बाण प्रश्नों के,
कौन बचा और कौन मरा,
आइए, देखें और जाने।

शिक्षक - कितने प्रतिशत भारतीय किसान गेहूँ की खेती करते हैं ?
राहुल - आधे शहर को भागते हैं, आधे कर्ज़ से मरते हैं, बेचारे खेती कहाँ करते हैं।
शिक्षक - छोड़ो, मोहन अब तुम बताओ।
मोहन - 65% सर।
शिक्षक - सही दिया है इसने जवाब। राहुल, तुम भी खोला करो कभी किताब। दो हफ्तों में परीक्षा है, अब तो कुछ करो जनाब।
राहुल - फिक्र Not Sir, Why to fear when Rahul is hear.
शिक्षक - पास तो गधे भी होते हैं, तुम्हारे पास दो रास्ते हैं, अभी मेहनत करो, लाइफ सेट हो जाएगी पूरी। या तो अभी मज़े करो, आगे करनी पड़ेगी मज़दूरी। लाइफ की सीरियसनैस तुम्हें अभी पता नहीं चलेगी।जब ठोकर खाओगे तब सुधरोगे। बड़ों की इज़्ज़त करना सीखो। तुम सुधरने वाले तो हो नहीं। हुँह---।

भाग चार
परीक्षा में दस दिन बाकी हैं।
Anouncer :- परीक्षा आ रही है पास, तब भी राहुल बाबू हैं बिंदास।
राज - कितनी बार Try किया पर मोहन फोन ही नहीं उठाता।
इशान - फोन उठाएगा कैसे, वो तो किताबों में डूबा हुआ होगा।
राधा - पढ़ाई से याद आया, Guys, तुम लोगों का कितना अभ्यास खत्म हुआ ?
करन - मेरा हर Subject में बस एक-एक Chapter बाकी है।
आकाश - ये Exam भी कोई Exam है ? Exam तो Board Exam होती है। अगले साल तक तो पढ़ ही लेंगे।
राहुल - मेरा तो सारा ध्यान फुटबाल फाइनल में है, इस बार भी कप हमारा ही होगा ।और इतनी टेंशन में पढ़ाई नहीं होती।
सारे मित्र एक साथ - ओहो----- टेंशन।

भाग पाँच
Anouncer :- बाकी हैं दिन आठ,
(सभी फुटबाल खेलते हैं परंतु मोहन नहीं आता।)
बाकी हैं छह दिन,
बाकी हैं पाँच दिन,
बाकी हैं तीन दिन,
बाकी हैं दो दिन।
( हर रोज़ एक-एक मित्र कम होता है और अंत में केवल राहुल बचता है।)
राहुल - (When left alone, enters the ground) अब पता चला कि रोज़ एक- एक करके कम क्यों हो रहे थे? लगता है उन्होंने पढ़ाई शुरू कर दी है। पर मेरा क्या है, कल का दिन बाकी है पढ़ ही लूँगा।
(Exits) (Re-enters as if very tensed with a book in his hand and flipping the pages. Pause on stage)

Anouncer :- बेचारे राहुल बाबू,
न कर सके किताबों को काबू,
हो गए मन और दिमाग से बेकाबू,
चले देखें, क्या करते हैं ये जादू।
राहुल - अब मैं क्या करूँ, कल-कल में मेरा पूरा समय निकल गया । अगर इस परीक्षा में फेल हो गया, तो मैं गया। आगे कुँआ पीछे खाई, अब कहाँ जाऊँ मेरे भाई। चलो मोहन से से ही मदद लेता हूँ।
Anouncer :- (मोहन और राहुल पढ़ते हुए, )
फिर की पढ़ाई दोनों ने मिलकर, तो कट गए दिन Exam के हँसते-हँसते, आज है दिन फैसले का, कौन रह जाता है किसके बिना।
शिक्षक - क्या बात है राहुल, इस साल तुम्हें अच्छे अंक आए हैं। लगता है कि तुमने कसके पढ़ा होगा ?
Anouncer :- यह सुनकर राहुल को होता है एहसास,
तब जाता है वो मोहन के पास,
क्योंकि पहले था वो बिंदास,
पर अब उसे लगा कि पढ़ाई है कुछ खास।
मोहन - पहले से पढ़ाई की होती तो इससे भी अच्छे अंक आते--- । अब मैं तुम्हें कहता हूँ कि Why to fear when Mohan is here.
(राहुल रोता है और मोहन के गले से लिपट जाता है)

Anouncer :- यहाँ बैठे प्रत्येक व्यक्ति में राहुल छिपा है, पर हमें अपने अंदर बैठा मोहन ढूँढना चाहिए। और कहीं न कहीं ऐसे हालात आ जाते हैं, जो हमें मोहन से मिलाते हैं और यही जीवन में परिवर्तन लाते हैं।

सभी झुकते हैं, और जाते हैं। Anouncer डमरू बजाता रहता है ओर निकल जाता है।।
समाप्त

फैज़ान मंसूरी, अकीक पटेल, करन पटेल, कक्षा ११

## बारिश

बारिश आई बारिश आई,
रिमझिम-रिमझिम बारिश आई ।
मोर नाचे, हम नाचे,
सभी नाचे, हम गाएँ ।
हमें लगती बारिश अच्छी बारिश
बारिश आई, बारिश आई।
बिजली कड़की हम डर गए,
हम हैं डरे कि बिजली,
हमारे ऊपर न गिर जाए ।
बारिश रुक गई,
सूरज निकल आया,
इन्द्रधनुष दिख गया,
हमारी कहानी खतम हो गई।
बारिश आई- बारिश आई
रिमझिम रिमझिम बारिश आई ।

Arushi Sethi, II

हर्षिता अग्रवाल, कक्षा ३

## दोस्त

Maitri Dadhaniya, Skg

एक बार एक लड़का था। वह बहुत भोला भाला था। वह पढ़ाई में भी आगे था और सब खेल में भी आगे था। वह किसी से बात भी नहीं करता था और समय आने पर घर लौट जाता था। एक बार एक लड़के ने देखा कि अध्यापिका और अध्यापक उसे ही हर चीज़ में लेते हैं पर उसे जलन बिल्कुल भी नहीं हुई, वह खुश हुआ और उससे दोस्ती कर ली। उसके पाँच-छः दिन बाद वह भी उस लड़के की तरह शैतान हो गया और यह बात उसके माता पिता को पता चली और वह घर भी देर से आता था। एक बार उसके पिता ने उसे उसके दोस्त के साथ देखा, जैसे ही उसके दोस्त ने उसके पिता को देखा वह तुरंत ही भाग खडा़ हुआ। इसलिए दोस्त उसे ही कहते हैं, जो मुसीबत में काम आए।

हिमाली सिरसीकर, कक्षा ४

## Pollution से बचाओ

एक planet पृथ्वी ने हमको जीवन
देके कहा मेरा ध्यान रखना।
परंतु इंसान तो विपरीत ही कर रहा है,
वह तो pollution बढ़ाता ही जा रहा है,
जिसके कारण resource खत्म हो रहे हैं
साथ-साथ global warming बढ़ा रहा है।
रात को तारे न दिखना भी आम बात हो गई।
धरती ने सोचा इसे तो सिर्फ
अपना फायदा दिखता है
बाकी समय अंधा हो जाता है।
बेचारी धरती पड़ गई tension में,
अब करें तो क्या करें ?
इतनी गड़बड़ हो चुकी थी।
आखिरकार उन्होंने सोचा इसको मज़ा
चखाना पड़ेगा तो उसने एक
plan बनाया।
आज जो उसने किया
वह आपके सामने है।

Manthan Grover, II

हीरल भार्गव, कक्षा ६

## तितली

तितली आई रंग-बिरंगी,
फूल पे बैठी सुंदर लगती।
एक दिन आई मेरे पास,
देने मुझे वरदान।
तितली आई रंग-बिरंगी,
उड़ती मेरे बगीचे,
आती मेरे पास।
तितली को तो मैंने रखा,
क्योंकि वह थी सुंदर।
तितली आई रंग-बिरंगी,
जिसके रंग थे,
गुलाबी, लाल, नीले, पीले,
और बहुत सारे,
तितली तो घूमती सबके साथ ।

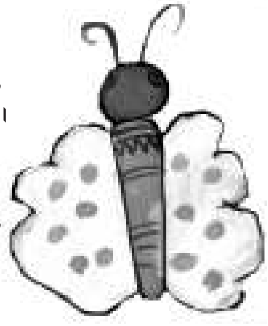

Krishna Kumar, I

हदेशा शाह, कक्षा ४

## तितली

Vidhi Shah, 9

तितली कितनी सुंदर होती
पंख फैला के उड़ती रहती
मुझे उड़ने के लिए ललचाती
पंख हैं उसके कितने सुंदर
फूलों में से रस पीती है
तितली कितनी सुंदर होती है।

ईशा पटेल, कक्षा ४

## केवल पेड़

Asimanand Sahoo, 9

आओ मिलकर पेड़ लगाएँ,
हरा भरा ये देश बनाएँ,
वातावरण को स्वच्छ बनाएँ,
इस जीवन को स्वस्थ बनाएँ,
पेड़ न कोई कटने पाएँ,
जंगल अब न घटने पाएँ,
मिलकर हम सब कसम ये खाएँ
आओ मिलकर पेड़ लगाएँ,
हरा भरा ये देश बनाएँ।
संदेश : हमें पेड़ लगाने हैं।

ईशा शाह, कक्षा २

## मेरी माँ

Sushant Sinha, 9

मेरी माँ बहुत अच्छी है,
वो बहुत मदद करती है,
मैं सुबह उठूँ तो वो मेरा खाना बनाती,
मैं स्कूल से आऊँ तो फिर वो खाना बनाती,
बहुत अच्छी है मेरी माँ,
मेरी माँ तो मुझे मदद करती है होमवर्क में भी,
मेरी माँ मेरे लिए बहुत अच्छी चीजें लाती है
मुझे खेलने भी देती है,
पर पढ़ाना तो भूलती नहीं
बहुत अच्छी है मेरी माँ

जानकी पटेल, कक्षा ३

## पूजा

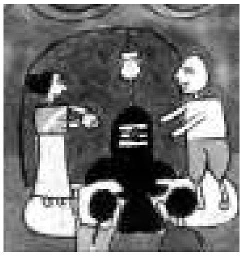
Lavanya Shroff, 4

हर रोज़ अगर हम पूजा करें
तो भगवान को खुश रखे
और जब उनका दिल दुखे
उनको हँसी मज़ाक कराए

हर रोज़ अगर हम पूजा करें
हमारे दिल का अँधेरा
वो झट से दूर कराए
तो हम भी पूजा कराएँ
ताकि हम सुखी रहें।

जय जोशी, कक्षा ३

## किताबें

Pankti Mashruwala, 9

किताबें मेरी सहेली हैं,
उनमें बहुत पहेली है,
पहेली सुलझाओ और आगे बढ़ो।
किताबें मेरी सहेली हैं,
किताबें ज्ञान बांटती हैं,
किताबें छोटी होती हैं और बड़ी भी होती हैं।
किताबें बोलती हैं,
किताबें मेरे मन को लुभाती हैं,
किताबें मेरी सहेली हैं।

कंदर्प रावल, कक्षा ४

## हमारा देश

Raina Kishor, 9

हमारा देश है बहुत सुंदर,
है हमको बहुत प्यारा,
सोने की चिड़िया कहलाता था,
अंग्रेज़ आए और सब बिगाड़ा,
पर हम साहसी ने एक नई दुनिया बनाई,
जिसको मदद चाहिए उसे मदद करो,
झूठ मत बोलो और भारत का नाम करो,
है सबको अपना देश प्यारा
सब कहते हैं इंकलाब ज़िंदाबाद,
भारत माता की जय, भारत ज़िंदाबाद

करीना मूलचंदानी, कक्षा ४

## मेरी बहन

Raina Kishor, 9

मेरी बहन है मुझको प्यारी,
है मुझको जान से भी प्यारी,
थोड़ी मस्ती करती है,
पर मुझे बहुत भाती है,
वह भी मुझे कम नहीं चाहती,
जब मैं रोऊँ तब वह रोए,
जब मैं अपनी माँ के पास जाती हूँ
तब रोती है पर मेरी माँ मुझे समझाती है,
जब वह बड़ी होगी, तब वह तुम्हारे पास ही आएगी,
कभी-कभी मैं सोचूं अगर वो नहीं होती तो,
मेरा क्या होता?

करीना मूलचंदानी, कक्षा ४

## बारिश

Meet Jetly, 9

बारिश आई, बारिश आई,
छम छम करती बारिश आई,
देखो देखो पक्षी पहुँचे अपने घर,
बारिश रुकी, बारिश रुकी
देखो देखो आसमान में,
अरे-अरे चिड़िया चूं-चूं करती आई,
देखो देखो हमारा सूर्य आ गया,
प्रकाश देने और कपड़े सुखाने,
अरे सूर्य दादा, अरे सूर्य दादा
अब जाना मत बादल के पीछे,
वरना चिड़िया जाएगी अपने घर वापस।

कशिश पटेल, कक्षा ३

## माता-पिता

Arushi Sethi, 11

हम माता-पिता का आदर करते हैं क्योंकि वे हमारा बहुत ध्यान रखते हैं। माता-पिता भगवान जैसे होते हैं। जब कोई हमारे साथ न खेल रहा हो तब वे हमारे साथ खेलते हैं। वे कभी-कभी जो चीज़ हमें न समझ आए तब वे हमें वो चीज़ समझाते हैं। वे हमारे लिए सबकुछ खरीदते हैं जो हमें चाहिए होता है।

वह हमें विद्यालय जाने के लिए कहते हैं जिससे हमें विद्या मिले। वो हमारे लिए सबकुछ करते हैं जो हमें चाहिए। सब माता-पिता अच्छे होते हैं। मैं मेरे माता-पिता को प्यार करती हूँ क्योंकि वे चाहते हैं, कि मैं अच्छी बिज़नेस लड़की बनूं। वो मेरा बहुत ध्यान रखते हैं। मेरे पिता मेरे साथ बहुत खेलते हैं। तो प्यार करें और आदर कीजिए अपने माता-पिता को।

काशवी खारावाला, कक्षा ४

## मेरी माँ

Tanya Khambolja, 11

हम सब हमारी माँ के लिए आँखों के तारे हैं ।
हमारे लिए हमारी माँ बहुत प्यारी है ।
हम जब छोटे थे तो, हमारा ध्यान रखती थी और अगर
हम उन्हें परेशान करें तो सोचो उन्हें कैसा लगता होगा?
हम लोग अगर बहुत ब े हो गए तो इसका मतलब
यह तो नहीं कि- हमारी माँ हमसे छोटी है ?
हर एक बच्चा भले जितना ही ब ा हो जाए, वो
अपनी माँ से छोटा ही रहेगा । अगर हमारी माँ ने
कोई व्रत रखा है, तो हमें परेशान करके उनका व्रत
तो ना नहीं चाहिये, बल्कि उनकी मदद करनी चाहिए।
हम अपने देश को भी माँ बोलते हैं,
पर वे हमारी ही वजह से बीमार हैं, और अगर उसे बचाना है,
तो बेकार की चीज़े कहीं भी फेंको मत ।

कवीशा खारावाला, कक्षा ४

**शेर का बच्चा**

Vidhi Shah, 9

एक बार एक शेरनी ने एक बच्चे को जन्म दिया। एक दिन शेरनी बाहर गई । एक शिकारी ने शेरनी को देखा और शेरनी को मार दिया। एक दिन बाद शेर को शेरनी के मरने की खबर मिली। अब उसके बच्चे के साथ रहने वाला कोई नहीं था ।

एक साल बाद शिकारी फिर आया। शेर ने उसे देख लिया। शिकारी उस पर हमला करे उससे पहले शेर ने उसे मार दिया। यह था न्याय। फिर शेर अपने बच्चे के साथ खुशी से रहने लगा।

कैश पंजवानी, कक्षा ४

**बिजली बचाव**

Sushant Sinha, 9

बिजली हमारे लिए महत्वपूर्ण होती है। अभी आप आइए और देखिए एक छोटा सा बच्चा जो ६ साल का है और बिजली को ठीक से इस्तेमाल नहीं करता । एक दिन वह छोटा सा बच्चा नाम है राजू । सुबह जब वह उठा तब उसने पंखे को बंद नहीं किया और बिजली का बिल बढ़ता गया, और उसकी माँ को पंखा बंद करना पड़ा, और वह लड़का जब उसके दोस्तों के घर गया, तब वह और उसका दोस्त एक कमरे में खेलने लगे। जब राजू के घर जाने का समय हो गया था तो उसका दोस्त बोला तुम लाइट और पंखा बंद करके जाना। मगर राजू ने बंद नहीं किया। जब वह अपने घर गया, तब उसके दोस्त की माँ ने लाइट और पंखा बंद किया । दोस्त की माँ बहुत गुस्से में थी, और रात में जब राजू पढ़ाई के लिए बैठा और जब उसकी पढ़ाई हो गई तब उसने पंखा बंद नहीं किया।उसकी माँ बहुत गुस्से में थी और बोली राजू अगर हम बिजली को संभालते तो पैसे कम होते ।
ऐसे शिक्षा मिलती है कि हमें हमेशा बिजली को बचाकर रखना चाहिए ।

कार्तिक करजीकर, कक्षा ४

**पेड़**

Asimanand Sahoo, 9

हर एक संत महान,
दस पुत्र पेड़ समान ।
पेड़ झूमें झूमें, पेड़ घूमें-घूमें।
हर पक्षी का है घर,
जानवर का है खाना।
पेड़ भी गाए गाना।
बनो उसके दोस्त,
वो भी बनेगा तुम्हारा दोस्त ।
पेड़ झूमें झूमें, पेड़ घूमें-घूमें ।
रखो उसका मान ।
करो उसका सम्मान ।
पेड़ झूमें झूमें, पेड़ घूमें-घूमें ।
प्यारा हमारा है पेड़,
न करो उसके साथ खेल,
पेड़ झूमें झूमें, पेड़ घूमें-घूमें ।

खुशी शाह, कक्षा ४

**स्वतंत्र भारत की स्वतंत्र संतान**

स्वतंत्र भारत की स्वतंत्र संतान,
बंधी है कितनी बाधाओं से आज,
जातिवाद, नस्लवाद, संप्रदायवाद,
की क्या कम थी आग,
जो आ गया आतंकवाद?
खून की नदियाँ बह गई
अहमदाबाद में, दिल्ली में,

Meet Jetly, 9

जयपुर, वाराणसी, बैंगलोर में।
आज एक संकल्प लेना है,
एक प्रतिज्ञा से बद्ध होना है,
यह देश हमारा है,
इसे टूटने, बिखरने, जलने नहीं देना है।
कोई हिन्दू नहीं, कोई मुस्लिम नहीं
न ही क्षत्रिय, न ही हरिजन।
हम सब एक ही माँ की संतान हैं,
खून का नहीं तो क्या हुआ,
एक ही माटी का रिश्ता है हमारा,
जो सारे बँधनों से बड़ा है।
कुछ करके दिखाना है,
भारत को दुनिया में सबसे बड़ा बनाना है।

किंशा गुप्ता, कक्षा ७

## पढ़ाई पढ़ाई पढ़ाई ११

Anand Shah, 9

पढ़ाई ही पढ़ाई क्या सच में ज़रुरी है ये पढ़ाई ?
हररोज़ करनी पड़ती है इन किताबों से लड़ाई
कभी कड़ाई तो कभी ढाई, कैसी है ये पढ़ाई ?
हर रोज़ कुछ न कुछ आ जाता,
हमारा दिमाग है खा जाता।
हमको इसमें नहीं है मज़ा आता,
शिक्षकों का गृहकार्य कभी न भाता।
कैसे गीत है ये गाता
हमको कभी न सोने देता
सब जगह पर ये छा जाता
यह कभी न हमको समझ में आता।
पढ़ाई ही पढ़ाई क्या सचमुच ज़रुरी है ये पढ़ाई ?

कृति ठक्कर, कक्षा ७

## बालश्रम

Raina Kishor, 9

क्या है ये बालश्रम
क्या आपको है कोई भ्रम ?
या है कोई आशंका
लेकिन सुनोगे तो रह जाओगे हक्का-बक्का
बालश्रम होता है वो
जिसमें बच्चे नहीं होते हैं दो।
बच्चे होते हैं बहुत सारे
जो होते हैं प्यारे और न्यारे
उसमें बच्चों को करवाते हैं काम,
जिसमें होता नहीं उनका कोई नाम
न उन्हें खाने को मिलता है एक
कभी जपना पड़ता है उन्हें राम का नाम
क्या उनके मालिकों को नहीं आती है शर्म
क्या उन्हें पता नहीं कि बच्चों के दिल,
होते हैं कितने नर्म ?

लेखिनी फुलतरिया, कक्षा ७

## गुब्बारे

Tanya Khambolja, 11

बड़े छोटे और लंबे, होते वह बहुत चमकीले,
लाल, हरे, पीले, गुलाबी और नीले,
जब आता है गुब्बारे वाला,
तब नहीं रुकते हैं हम बच्चे,
मम्मी को बुलाते हैं और दस रुपये माँगते हैं,
दे दो मम्मी हमें दे दो हमें पैसे दे दो,
हमें खरीदने हैं गुब्बारे,
हम उन्हें उछालेंगे और उनसे धूम मचाएंगे,
पर एक दिन वह भी धूम मचाएंगे
जब वह फट जाएंगे,
फटाक फटाक फट जाएंगे,
बड़े छोटे और चमकीले।

लावन्या श्रॉफ, कक्षा ४

## डाकिया

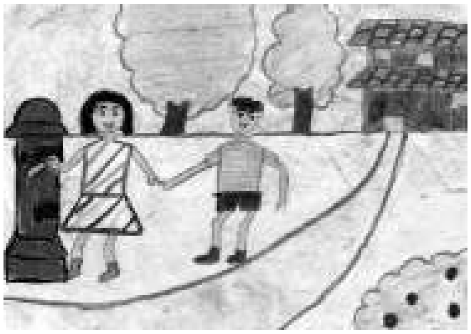

Khushi Patel, 5

घर-घर देता डाक डाकिया
नाम है इसका धैर्य भाटिया।
दुःख की सुख की खबर है लाता
पर, सुष्मिता का पत्र न लाता ।।
आशा उसकी टूट गई है ,
सुष्मिता उससे
रुठ गई है ।

माहेरा शेख, कक्षा ३

## दुखी

Vidhi Shah, 9

ओह पेड़, ओह पेड़, तुम हम सुखी,
तुम हमें सुख देते हो पर हम तुम्हें दुख।
मैं हूँ बच्चा पर नहीं कच्चा।
पर हूँ सच्चा तुम्हें बचाऊँगा।
प्यारे पेड़, प्यारे पेड़ हमें देते छाँव
पर तुम कभी नहीं दिखाते अपने हाव-भाव
तुम देते फूल,
पर मैं जाता स्कूल।
लम्बे पेड़ तुम्हारे पास हैं पत्ते
पर हम तुम्हें काटने का काम करते।
तुम्हीं लम्बे, और हम याद करते वह लम्हे,
जब चढ़े थे तुम पर।

माहिर सिंग गोहिल, कक्षा ५

## हमारा भारत

Sanyam Gandhi, 9

कहाँ है हमारा भारत, कैसा है हमारा भारत?
हमारा भारत बहुत सुंदर है।
देखो वो रहा है हमारा भारत।
जहाँ कोई कोमल, कोई कठोर,
जहाँ कोई दानव, कोई मानव,
जहाँ कोई आस्तिक, कोई नास्तिक,
जहाँ कोई सदाचारी, कोई दुराचारी।
जहाँ कोई शैव, कोई वैष्णव,
जहाँ कोई मांसाहारी, कोई शाकाहारी,
जहाँ कोई राजा, कोई रंक,
जहाँ किसी की जय, किसी की पराजय।
जहाँ कश्मीर जैसा दर्शनीय स्थल है,
जहाँ गांधीजी जैसे देशप्रेमी आकर गए,
जहाँ जन्मांध कवि सूरदास ने कविता लिखी,
जहाँ अकबर जैसे महान राजा राज कर गए।
जहाँ लोग मिल-जुलकर रहते हैं,
जहाँ गंगा जैसी पवित्र नदी है,
जहाँ ताजमहल जैसा महान महल है,
जहाँ हिन्दी हमारी राष्ट्र भाषा है।
देखा हमारा पवित्र भारत,
देखी हमारे भारत की सुंदरता।

मनाली उपाध्याय, कक्षा ७

## माता-पिता की छत्र छाया

Asimanand Sahoo, 9

अभी आप जीते हुए माता-पिता की छत्र छाया में हो,
बचपन में दो बात सुन लेना,
जब उनकी मृत्यु हो जाएगी तब,
मुँह में गंगाजल डाल के क्या फायदा--।
अंदर से आशीर्वाद देने वाले को,
एक बार सच्चे हृदय से लगा लेना,
जब वे नहीं होंगे तब झुके सर से
उनकी तस्वीर को प्रणाम करने से क्या फायदा--।
जब उनकी मृत्यु हो जाएगी तब घबरा के क्या फायदा,
प्रेम और दयालु वाले हाथ आपके सिर पर फिर नहीं घूमेंगे,
लाखों कोशिश करने पर भी वैसा प्रेम फिर नहीं मिलेगा,
फिर अपने कमरे में उनकी तस्वीर लगाके क्या फायदा--।
माता-पिता का प्रेम भाग्यशाली बच्चे को ही मिलता है,
अपने माता-पिता के चरणों में ही सारे धाम हैं तो,
फिर चारों धाम यात्रा करके क्या फायदा।
प्रेम एक पल में आकर चला जाएगा,
फिर इस नदी के किनारे सीपियाँ चुनकर क्या फायदा--।
जब वे जिंदा हों तब उनका दिल जीत लेना,
पतझड़ के मौसम जैसा व्यवहार उनके साथ करना,
जब उनकी मृत्यु हो जाए,
तब उनकी अस्थि गंगा में बहाकर क्या फायदा--।
श्रवण बनके उनके बुढ़ापे में आसरा देना
प्रेम से हाथ पकड़कर उनको चारों धाम की यात्रा कराना
मातृदेवो भव, पितृदेवो भव, यह बात सही है,
बाद में राम नाम सत्य बोल के क्या फायदा--।
पैसा खर्चने से सब मिलेगा, पर माता पिता नहीं मिलेंगे
गया हुआ समय वापस नहीं आएगा, लाखों कमाने से क्या
फायदा,
प्रेम से सिर पर हाथ फेरकर बेटा कहने वाले नहीं मिलेंगे,
फिर दूसरों का प्रेम लेकर आँसू बहाने से क्या फायदा--।

मनाली उपाध्याय, कक्षा ७

**क्या हो गया है हमारे देश को?**

Arushi Sethi, 11

कहाँ गया सब लोगों का विश्वास?
कहते हैं हज़ारों में एक कोई ही होता,
जिसकी सोच हमसे अलग होती, कौन है वो?
अब वो ही हमारा देश बदल सकता है।
सोचिए हम में से ही कोई होगा तो,
शायद आप वो व्यक्ति होंगे तो,
सोचिए कितनी अच्छी बात होगी,
आप हज़ारों में से चुने गए एक व्यक्ति हैं।
आप कुछ नया करेंगे,
आप और अपने माता-पिता का नाम रोशन करेंगे।
आपके ऊपर अलग-अलग कहानियाँ लिखी होंगी,
आप को मिलने के लिए लोग टूट पड़ेंगे,
बच्चे आप के बारे में किताबों में पढ़ेंगे।
आप ही रोशन करेंगे अपने देश का नाम,
आप ही बदलेंगे देश का भविष्य,
लोगों को विश्वास दिला देंगे,
कि अभी आगे भी एक ही रहेंगे,
ढूँढिए उस व्यक्ति को।

मनाली उपाध्याय, कक्षा ७

**मेरी माँ**

Sushant Sinha, 9

मेरी माँ है बहुत प्यारी, लगती है जैसे न्यारी
करती है मेरा सब काम, रखती है अपना ऊँचा नाम।
डाँटती है, मारती है, घर से बाहर निकालती है,
कभी नहीं खोती है प्यार, करती है मुझसे वो प्यार।
खेलती है वो मेरे साथ, लड़ाई भी करती मेरे साथ,
ध्यान रखती है, ख्याल रखती, बहुत अच्छी तरह रखती है।
मेरी माँ है सबसे प्यारी, लगती है जैसे न्यारी।
करती है सब घर के काम, कभी नहीं भूलती है नाम,
मेरी माँ है सबसे प्यारी, लगती है जैसे न्यारी।

मानसी वकारिया, कक्षा ५

**मेरा परिवार**

Arushi Sethi, 11

मेरे परिवार में नौ लोग हैं ।
उनमें मेरे माता-पिता, मेरी दो छोटी बहन भी हैं ।
मेरे परिवार में अच्छा खाना भी बनता है ।
मेरे परिवार में मेरे पापा, चाचा और मेरे दादा दफ़्तर में काम करते हैं ।
मेरी माँ, चाची और मेरी मेरी दादी घर में स्वादिष्ट खाना बनाते हैं ।
मैं और मेरा परिवार साथ में खेलते हैं, घूमने जाते हैं,
फिल्म देखते हैं और खुशी से घर आते हैं ।
अगर मेरा परिवार न होता तो मुझे खुशियाँ नहीं मिलती ।
मुझे मेरा परिवार बहुत अच्छा लगता है ।

मानुषी मनियार, कक्षा ३

**होली**

Sanyam Gandhi, 9

नीली, पीली, हरी, लाल,
ऐसे रंगों से मिलते गुलाल,
आए यह हर साल,
लिए गुलाल से रंगे गाल।
होली के एक दिन पहले,
होलिका है जलाई,
फिर बच्चे, बूढ़े, बुज़ुर्ग, छोटों ने मिलकर,
रबड़ी, बर्फी, लड्डू खाई।
इसलिए है होली इतनी खुशियाँ लाई,
आओ सारे बैर भूलकर गले मिलो मेरे भाई।
सब भूल गए बारूद-गोली,
और सबने मिलकर मनाई होली।

मार्कण्डेय सिंह, बृहद दवे, कक्षा ७

## परीक्षाएँ

Sushant Sinha, 9

परीक्षाएँ आई, परीक्षाएँ आई!
सब जगह त्राहि-त्राहि है मचाई,
मम्मी रट लगाती है करो पढ़ाई! करो पढ़ाई
पापा गणित-विज्ञान में करते मस्तिष्क की धुनाई।
मानो यह परीक्षाओं ने कर दी हम पर विकट चढ़ाई
तभी मुझे नानी-दादी की याद आई,
क्योंकि वे कभी नहीं कहते कर लो पढ़ाई,
शिक्षक देते हमें अच्छी खासी सुनाई।
छुट्टियों के इंतज़ार में बेसब्री हम पर है छाई,
किताबी कीड़ा हमको है बनाई,
भूल गए स्वादिष्ट रसगुल्ला-रसमलाई।
जब परीक्षाओं के रह गए दिन चंद,
मम्मी ने कर दिया मेरा खेल-कूद बिल्कुल ही बंद,
इस बार परीक्षाओं ने तो किया बहुत ही तंग,
कर दिया होली के रंग में भंग।
सारी परीक्षाओं के प्रश्न थे सरल,
उत्तर लिखते रहे हम अविरल,
इसी उहा-पोह में परीक्षाएँ हुई खत्म,
और उम्मीद है कि अंक मिले हैं उत्तम।
एक-एक करके मिलने लगे परीक्षा-फल,
तब जाकर मुझे महसूस हुआ परिश्रम नहीं गया निष्फल,
मुझे सारे विषयों में अंक मिले अव्वल,
सचमुच परीक्षाएँ बनाती हैं भविष्य उज्जवल।

मार्कण्डेय सिंह, कक्षा ७

## एकता

Sushant Sinha, 9

एकता में ही बल है,
एकता में ही हल है।
देश की एकता ही हमारा धर्म है,
इसे पालना हमारा कर्म है।
एकता में ही जीत हमारी,
एकता में ही प्रीत हमारी।

मिथी चौधरी, कक्षा ८

## होली!!!

Pankti Mashruwala, 9

आई रे होली आई,
रंगों की बहार लाई,
खुशियों की बारात लाई,
होली रे होली आई।
जब आस्तिक हुआ प्रमोट,
नास्तिक को मिला डीमोट,
दुनिया ने बदली दिशा,
नास्तिक का भूत पिसा।
आई रे होली आई,
रंगों की बहार लाई,
खुशियों की बारात लाई,
होली रे होली आई।
हर ज़ुबान पे होली आई,
हर दिलों में खुशियाँ छाई,
पापियों की मिटी परछाई,
सज्जनों ने पुण्य नदी बहाई।
आई रे होली आई,
रंगों की बहार लाई,
खुशियों की बारात लाई,
होली रे होली आई।
भूतों का डर मिटा,
राक्षसों का श्राप हटा,
भ्रष्टाचार का भूत भागा,
सत्याग्रह का मन चाहा,
आई रे होली आई,
रंगों की बहार लाई,
खुशियों की बारात लाई,
होली रे होली आई।

मोनिका पाठक, कक्षा ७

## मेरा भारत

जहाँ खेतों में लहलहाती हरियाली,
जहाँ चिड़ियों की आवाज़ से हो जाती छटा निराली,
जहाँ बच्चों की आवाज़ लगती है सबको प्यारी,
जहाँ हर ओर से नदियाँ है बहती।
वो मेरा भारत है।
जहाँ उसके उत्तर में है स्वर्ग सा कश्मीर,
ओर पश्चिम में है राजपूत से वीर।
जहाँ पूरब में है सात बहनों का जोड़ा,
और दक्षिण में है कलाकारों की रुचि वाली कला।
यहाँ पे कोई सिक्ख, कोई पारसी,

कोई हिंदू है तो कोई मुस्लिम,
पर किसी में कोई भेद-भाव नहीं।
यहाँ सब एकता से रहते हैं,
यहाँ सब प्यार से रहते हैं।
ये बनाता है भारत को रंगीन,
और बाकी दुनिया से भिन्न।

Anand Shah, 9

मोनिका पाठक, कक्षा ७

## महँगाई

Sushant Sinha, 9

हाय! यह महँगाई,
करा दी हममें इसने लड़ाई।
है वही चोर जिसने सबके दिलों की शांति चुराई,
अब तो महँगी कर दी है पढ़ाई,
क्या करें अब गरीब बहन-भाई।
हाय! यह महँगाई।
न अब कोई पहनता है कानों में बाली,
पर पैसे बचाने में नोटें ज़रुर बनती हैं जाली।
खाने-पीने में भी बना दी महँगाई की दीवारें पक्की।
क्या करें गरीब बहन-भाई,
हाय! यह महँगाई।
न गाँवों में है राशन,
और बुज़ुर्गों के जेब से कट रही है पेंशन।
पैसों की हो रही महँगाई,
हाय! यह महँगाई।

मोनिका पाठक, कक्षा ७

## पतंग

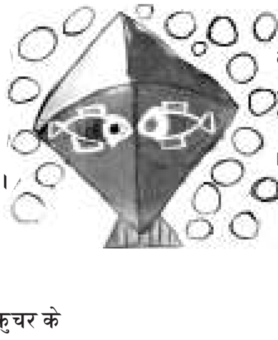
Tejas Sofat, Skg

पतंग आई, पतंग आई,
लाल-लाल रंग लाई ।
सुन्दर-सुन्दर सी
लहर-लहर सी ,
आसमान में खो जाए ।।
चि या उसे देखे,
तो फा डाले ---

कचर-कचर के कुचर-कुचर के
धरती पे गिर जाए ।।

मुझे दुःख हुआ यह एहसास कि,
धरती साफ होनी चाहिये ।

मैं अपने देश और धरती से
बहुत प्यार करती हूँ ।।

नमस्या पटेल, कक्षा ४

## कर्ण का प्यार

Manthan Grover, 11

क्यों नहीं यह संसार समझ पाया कर्ण को?
उसके प्यार, उसकी तपस्या और उसके बलिदान को, हम यह कहते हैं कि वह दानवीर था,
अर्थात दान देना ही उसका धर्म था?

क्या उसकी कोई इच्छा, तृष्णा या आकांक्षा न थी?
फिर क्यों कर्म क्षेत्र में उसको हरदम मिली प्रताड़ना थी?
काल ने भी उसके साथ किया मज़ाक था,
जो दानवीर कहलाता है, वह खुद सबकी दया का पात्र था।

कर्ण जो कि परम तेजस्वी, रण-कुशल, अद्भुत बलशाली और उदार थे,

परंतु केवल अपनी जन्म-कहानी के कारण जीवन भर घुटते जलते रहे,
उन्होंने जितना आत्मदान किया और कोई न कर पाया,
पर इस आत्मदान करने का संतोष जन्म भर उसे न मिल पाया।

वस्तुतः यही संसार है, इसमें जो आत्मदान करे,
उसी के लिए सारे नियम, अभियोग व बलिदान हैं,

मन सिर्फ चाहता है इतना करना कि---

हे सूत, इस जीवन रथ गति को करो कुछ धीरे,
ताकि अश्व अपने से चलें उन्मुक्त धीरे-धीरे।

नम्रता चटर्जी, शिक्षिका

**भगवान**

Praneeta Tiwari, 4

हे मेरे भगवान, मेरी दुआ सुनो,
मेरे मन की इच्छा सुनो,
उनको पूरा करो, अपने मन से करो,
हे मेरे भगवान, मुझे बुद्धि दो,
पढ़ने लिखने की शक्ति दो,
बड़ा अफसर बनाओ
हे मेरे भगवान मेरी रक्षा करो,
मुझे लंबी आयु दो
मेरे परिवार को सुरक्षित रखो,
हे मेरे भगवान दुनिया सुरक्षित रखो,
बारिश बढ़ाओ, पेड़ बढ़ाओ,
गरमी से छुटकारा दिलाओ
हे मेरे भगवान ।

नींव मित्तल, कक्षा ४

**द्रौपदी अभी भी ज़िंदा है**

Manthan Grover, 11

माना द्वापर बीत गया, पर,
युग हुआ पुनः शर्मिन्दा है।
लज्जा लुटती सरे आम,
द्रौपदी अभी भी ज़िंदा है। द्रौपदी अभी भी ज़िंदा है।।

क्या कौरव क्या पांडव,
सब मूक बने हैं देख रहे,
युग किस पर प्रश्न लगाता है,
और करता किसकी निन्दा है। द्रौपदी अभी भी ज़िंदा है।।

राजा केवल नहीं आज,
जनता सारी धृतराष्ट्र बनी,
कायरता है जीत रही,
हृदय सभी का अंधा है। द्रौपदी अभी भी ज़िंदा है।।

विक्षिप्त हुआ जाता है मन,
माधव अब तो अवतार धरो,
धर्म-अधर्म से सजी सभा में,
मानव बना दरिंदा है। द्रौपदी अभी भी ज़िंदा है।।

निधि शर्मा, शिक्षिका

**माँ की चीत्कार**

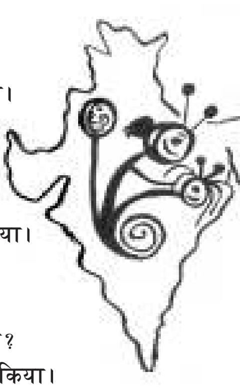
Arushi Sethi, 11

मातृ-भूमि ने हर पल, हर क्षण,
करुणा-पूर्ण चीत्कार किया।
हृदय चीरकर रख डाला,
अपनों ने ही अत्याचार किया।
मुकुट उतार ज़मीं पर फेंका,
केश राशि को काट दिया।
कैसे कहूँ उन्हें भाई?
माँ का जिसने तिरस्कार किया।
दाह दिया अग्नि में उनको
भरण नहीं भक्षण है किया।
क्या पिता तुल्य मानूँ उसको?
इस जन्मभूमि पर व्यभिचार किया।
सूख गया करुणा का सागर,
माँ ने ममता का त्याग किया।
कहाँ मिलेगी शरण तुम्हें?
गर माँ ने ही बहिष्कार किया।

निधि शर्मा, शिक्षिका

**माता-पिता की छत्र छाया**

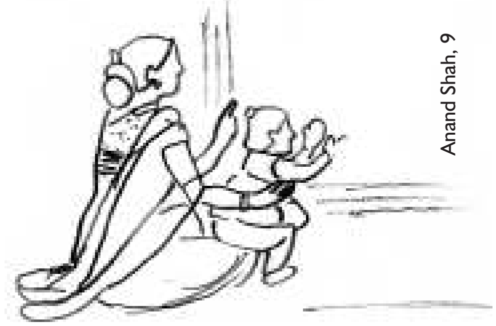
Anand Shah, 9

जब तक है तन में प्राण, उनकी छत्रछाया में बैठकर,
प्रेम के दो शब्द प्यारे, आज तो तुम बोल लोगे,
कल जब ये अधखुले अधर सूख जाएँगे,
बाद गंगाजल की दो बूँदें डालकर क्या करोगे?
अंतरमन जिनका सदा दे रहा तुमको दुआ,

एक क्षण उनको हृदय से आज तो तुम लगा लोगे,
कल जब न उनका जीवन बचेगा,
बाद छवि को नमन कर क्या करोगे ?
काल की जब चोट होगी, वे अलविदा कह जाएँगे।
आशीष जो प्रेम का था, जाकर कहाँ से कल वो लोगे,
लाख कर लो तुम जतन, वात्सल्य जब होगा नहीं,
दीवार पर उनकी तस्वीरें सजाकर क्या करोगे ?
माता-पिता रूपी रतन, भाग्यशाली को मिलेगा,
सड़सठ तीरथ उनके चरण हैं और तीरथ क्या करोगे,
स्नेह की लहरें जो आकर पल में चली जाएँगी,
बाद किनारों के खाली सीप लेकर क्या करोगे ?
जब तक है जीवन, मन को उनके प्रेम जल से सींचना,
पतझड़ के मौसम में वसंती रंगों को, आज तो तुम भर सकोगे,
पंचतत्व में उनकी देह जब मिल जाएगी,
तब अस्थियों का गंगाजल में विसर्जन कर क्या करोगे ?
श्रवण बनकर बुढ़ापे का सहारा आज बनना,
प्यार से दे सहारा, कोई तीरथ आज ही बस कर सकोगे,
माता-पिता हैं देव-तुल्य ये तो सनातन सत्य है,
बाद राम नाम सत्य है बोलकर तुम क्या करोगे ?
धन से तो वैभव बहु मिलेगा, माता पिता ये ना मिलेंगे,
बीता समय आता नहीं, फिर लाखों कमाकर क्या करोगे,
ममता के आँचल में समाकर, पुत्र कहने वाले न होंगे,
बाद में झूठे प्रेम के अश्रु बहाकर क्या करोगे ?

निधि शर्मा, शिक्षिका

## साथ तुम्हारा----

Vidhi Shah, 9

साथ तुम्हारा पावन है इतना,
पूजा में फूल होते हैं जितना।
सूरज की दमक मस्तक पर तुम्हारे,
हास चाँदनी का हँसी में है प्यारे।
आँखें तुम्हारी जुगनू सी चमकती,
एक सत्य की झलक जिसमें हर पल है दिखती।
चरित है तुम्हारा गंगा सा निर्मल,
आवाज़ में है संगीत का स्वर।
हर कदमों की आहट प्रात का आगमन है,
रेशम सी मुलायम हृदय की छुअन है।
हे प्रिय, तुम जलद हो मैं दामिनी हूँ,
नयन को बिछाए खड़ी कामिनी हूँ।

निधि शर्मा, शिक्षिका

## टैगोर

Anand Shah, 9

टैगोर जी एक बहुत अच्छे अध्यापक थे ।
वो सबको मनचाहा काम करने देते थे ।
वो सफ़ेद रंग की धोती और सफ़ेद कप ा पहनते थे।
वो ओपन कक्षा लेते थे ।
वो गाँधी जी के टाईम में थे ।
उनको नोबल प्राइज़ मिला है ।
उन्होने राष्ट्रीय गान बनाया था ।
वो बहुत अच्छे से प ाते थे ।

निमिष गोलयान, कक्षा ३

## कैसी बीती

Arushi Sethi, 11

मुझको पता है, यहाँ कैसी बीती,
किसी ने न जानी, यहाँ की रीति।
जीवन है सबका, एक कड़वी सच्चाई,
किसीकी ना टिकती यहाँ पर अच्छाई।
जी ले यहाँ पर, तू बनकर ही मस्ती,
रह जाएगी, बाद में सिर्फ अस्थि।

कह दे तू पल को, अपनी सच्चाई,
मानेगी दुनिया, जान सब की बचाई।
पकड़कर ही हाथ, साथ चलना सभी के,
सार ज़िंदगी का, यही सिर्फ नीतिन

नीतिन चावड़ा, शिक्षक

**आतंक को खतम**

Manthan Grover, 11

अरे! ये क्या हुआ,
सौ लोगों की हत्या हो गई?
पर यह सब किसने किया है?
हाँ, मुझे पता है,
यह आतंकवादी ने किया है।
उन्होंने कितने परिवार, घर, लोग को बरबाद कर दिया है।
आतंक को रोकने के लिए हम क्या करें, क्या करें,
पर हमें तो क्या होगा,
हम तो सिर्फ घर डरे बैठेंगे,
और सहते रहेंगे जो हो रहा है।
हम लोग, पर कब तक सहेंगे?
क्यों हम आतंकवादी को मारकर
हम कहाँ भी डरे बिना जा सकते हैं।
पर इसलिए हम क्या करें?
हे भगवान क्या आपको अपने बच्चे मरते हुए पसंद हैं?
तो आप हमें इस आतंक से बचाओ।
सिर्फ यही दुआ आपको मुझसे, इस आतंक से बचाओ।
पर और एक चीज़
अगर हम मिल-जुलकर रहें तो
हम आतंक से बच सकते।
हमें इस आतंक को खतम करना है,
आतंक को मार डालना, खतम कर देंगे।

नियोमी शाह, कक्षा ५

**मोर**

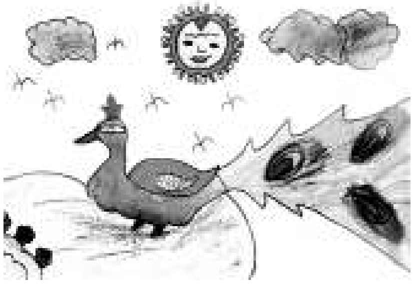

Mansi Vakharia, 5

इधर उधर भागता है,
टुहक टुहक करता है,
देखने में कितना भोला-भाला है,
सबका मन हर लेने वाला है,
जब अपने पंख फैलाता है,
बहुत ही प्यारा लगता है,
बादल देख हर्षाता है,
बारिश में थिरकने लगता है,
छोटे-बड़े सभी का प्यारा है,
पूरे देश का भी चहेता है।

नूर मोहम्मद, कक्षा ४

**जीवन**

Asimanand Sahoo, 9

जीवन है जीने के लिए
ये तो सभी कहते हैं ।
कहते हैं, कहकर भूल जाते हैं कि,
जीवन है जीने के लिए ।।

कल क्या होगा किसने जाना,
खुशी-गम का ताना-बाना
चलता रहता जीवन भर,
जीना है सबके साथ क्योंकि-
जीवन है जीने के लिए ।।

क्यों कोसते हैं फिर किस्मत को?
क्यों चाहते हैं फिर जन्नत को ?
जप- तप जागरण करके हारे
कुछ भी जतन काम न आया
फिर वही कहा --- जीवन है जीने के लिए ।।
घोर दुःख अपमान सहे
कभी लगाए खूब कहकहे
अगले ही पल जब ये सुना
जीवन दीप प्यारे का बुझ गया
शोकाकुल होके कहा --- जीवन है जीने के लिए ।।

पिंकल सिंह, शिक्षिका

**जनक**

करूँ विचार रामायण का, कोई पात्र मुझे लगे अपना सा,
जनक, मेरे पिता समान,
वहीं भावुकता, विश्वास, प्रेम, प्रेरणास्त्रोत।
हम पर रखा विश्वास, जीवन में जो भी करो
सौ प्रतिशत करो।

बीस वर्ष पहले छात्रावास में भेजा,
पर कभी प्रश्न नहीं किया
हमारा सहारा बने।
हमारी ज़िम्मेदारी बढ़ी, उस विश्वास को बनाए रखने की।
शायद विश्वास करने व तोड़ने से अधिक
कठिन व महत्वपूर्ण है विश्वास बनाए रखना।

विवाह किया और कहा कि यह तुम्हारी पूँजी
तुम्हें सौंपूँ, जो तुम्हारी अमानत थी।
फिर कभी हम जो बुरा कहें ,
कहें, बेटी
हमने तुम्हें विदा किया, अब वहीं तुम्हारा सम्मान।

उस विश्वास को बनाए रखने की,
फिर हमारी ज़िम्मेदारी बढ़ी।
निभाया उसे सौ प्रतिशत देकर।

मैं चन्द्रसुता, वे मेरे जीवन के आदर्श,
सदा मुस्कराते, सदा विश्वास झलकाते, स्नेह बरसाते।
शत-शत प्रणाम ऐसे पिता को---

Asimanand Sahoo, 9

पूनम अत्रेजा, शिक्षिका

## होली

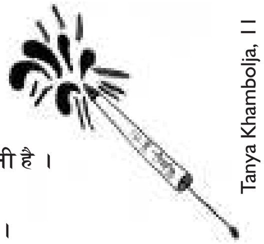
Tanya Khambolja, 11

होली मार्च के महीने में आती है ।
होली पर हम रंग-गुलाल
एक दूसरे के ऊपर फेंकते हैं ।
होली में हम फेंकते हैं रोली,
होली पे हम मिठाई खाते हैं और खिलाते हैं ।
हम अपने घरों के सामने रंगोली बनाते हैं।
रंगोली बहुत चीज़ों से बनती है ।
जैसे- चावल के दाने , संगमरमर से, रंगों से ।
होली पर बालक , वृद्ध युवा सब लोग मिलकर
होली खेलते हैं । धनी और गरीब सब ।।

प्रणीता तिवारी, कक्षा ४

## सत्य की परिभाषा

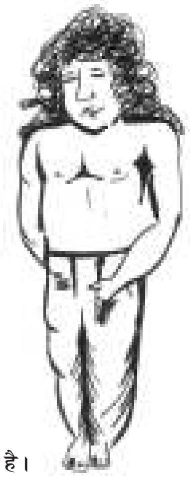
Arushi Sethi, 11

जीवन की इस धरा में,
अजब-गजब की गुत्थियाँ हैं।
महाभारत के इस महाग्रंथ में,
कहीं तो हमारा ही उल्लेख है।।

मैंने पाया मुझमें ही,
कहीं कृष्ण, कहीं अर्जुन।
युधिष्ठिर और दुर्योधन
कहीं शकुनि की छाया है।।

लोभ-परलोभ, मान-अभिमान,
यक्ष, त्याग, कीर्ति की अभिलाषा है।
सत्य के मार्ग पर, क्यों न चल सके,
क्या यह भी विधि का कोई विधान है ?

क्यों नहीं समझ सका यह मन,
यह इस जीवन चक्र की यह माया है।।

कृष्ण जैसे महापुरुष को भी,
जन्म लेना पड़ा इस धरती पर।
बच नहीं पाये वे भी
इस माया जाल के मोह-पाश से।।

विधि का विधान भी अजीब है,
करे कोई और भरे कोई और है।
जैसे अमावस के बाद पूनम की चाँदनी है,
असत्य हो तभी तो सत्य की पहचान है।।
क्यों नहीं बना कर्ण
ज्येष्ठ भ्राता पांडवों का।
सत्य जानते थे जब,
कृष्ण, कुन्ती और भीष्मपितामहा।।

क्यों छुपाया माता कुन्ती ने,
अपने कर्ण की परिचयता।
क्या माँ की ममता में भी,
छलका कहीं कपट है ?

हर मोड़ पर हमने पाया,
जीवन एक संघर्ष है।
क्या सत्य की राह पर चलना,
सच में इतना कठिन है ?

क्यों नहीं दे पाते हम,
आवाज़ अपनी व्यथा की।

क्यों हमारी चुप्पी को,
कायरता समझी जाती है।।
हाँ शायद।
यही इस जीवन की सीख है।

पर कर लिया निश्चय हमने भी,
चलना है इसी मार्ग पर।
साथ न छूटे सत्य का कभी
हो विजय हर राह पर।।

विधि का यह विधान,
हमें भी स्वीकार है।
छोड़ जाएँगे हमारा अंकन,
इस जीवन के संग्राम में।।

प्रतिभा भाटी, शिक्षिका

**हरियाली का फोटो**

Prasanna Shah, 6

बच्चों बच्चों आओ देखो, पेड़ों की हरियाली।
रंग-रंगीले फूलों और मज़े की भर-ताली।
आओ देखो मेरा खेल, पेड़-पौधों के साथ।
इधर गाड़ी, उधर रेल, भीड़ लग गई जल्दी से।
सोचा मैंने कि एक फोटो खीचूँ,
कैमरा नहीं तो क्या? घर जाऊँ तो देर लगेगी,
यहाँ नया लूँ तो पैसे का खर्च लगेगा, यहाँ खड़ी रहूँ तो समय का बिगाड़,
वहाँ जाऊँ तो पढ़ाई का संभाल।
तो मैं घर गई रोती रोती, पढ़ाई से डरती।
आया पढ़ाई में मज़ा, तो रोते-रोते हँस पड़ी,
दूसरी बार गई तो कैमरे के साथ।
लिए फोटो हँसते-हँसते, चिड़ियाँ के साथ खेलते।
हँसते-हँसते आई वापस, मज़े के फोटो के साथ।

प्रेक्षा पटेल, कक्षा ४

**विचारों की महाभारत**

Tanya Khambolja, 11

वो भी एक युग था, आज भी एक युग है।
पर बात दोंनो युगों की, लगती कुछ एक सी है।
कहने को क्या कहें हम, तब था युद्ध कौरवों पाडंवों के बीच।
आज भी तो कहीं कहीं दिखता है भाई-भाई का दुश्मन।।

किसकी हुई हार किसकी हुई जीत।
ये तो थी कई रिश्तों के बीच की हार जीत।
कोई मरा या कोई बचा पर ये कैसा युद्ध था।
कहने को तो ये धर्म युद्ध था।।

कितनो के सर कटे, कितने हुए घायल।
कितने घरों में हुआ अँधियारा।
कितनों के यहाँ हुआ उजियाला।
पर अंत समय तो सबको है एक पथ पर जाना।
ये जो कोई जान ले वो ही कहलाता सच्चा योद्धा।।

हम कुछ भी करें, हम कुछ भी कहें।
पर सब है कर्मों का लेखा-जोखा।
मानव जब तक इस धरती पर है तब तक।
हिसाब देना होगा हर एक को इसका।।
कुछ समझ नहीं आता, मानव की मति न्यारी है।
कहीं कुछ सही, कुछ गलत, पर ये तो बहती जाती है।।

पूजा बचानी, शिक्षिका

**सीखें हम**

Arushi Sethi, 11

महर्षि वेदव्यास की रचना महाभारत,
कलयुग में भी जीवन को करती सार्थक।
अच्छे बुरे पात्रों की भरमार है जिसमें,
न मिलेगा कहीं और जो नहीं है इसमें।
पात्र सब एक दूसरे से हैं भिन्न,

आज के जीवन से जुड़े हैं अभिन्न।
छल, कपट, और लोभ लालच के घड़े,
छोड़ प्रेम-स्नेह भाई भाई से लड़े।
पर नहीं सिर्फ कथा बुराई की यह,
हैं दो पहलू इसके भी हर सिक्के की तरह।
अच्छाई और बुराई दोंनो ही इसके भीतर,
पर ये करता सदैव हम पर ही निर्भर,
क्या लेंगे सीख बुराई को त्याग कर।

करें निस्वार्थ सेवा, मन-प्राण ध्यान से,
ऐसी सीख लें हम भीष्म-प्रतिज्ञा महान से,
विदुर से सीखें सही राह चलना,
नीतिपूर्ण बातें बताकर बुराइयों से आगाह करना।
शिष्यों का अपने हर अज्ञान को मिटा देना,
सीखें गुरु दोण से ज्ञान का प्रकाश देना,
युधिष्ठिर की भाँति हों सत्यवक्ता व धीरज धरें,
अर्जुन की तरह अपने लक्ष्य को प्राप्त करें।
कर्ण की तरह हम दानी बनें,
द्रौपदी की तरह हम मानी बनें।
भीम की तरह शक्तिशाली बनाए अपने आपको,
श्रीकृष्ण की तरह मिटाए अन्याय और पाप को।
बने एकलव्य की तरह स्वयंदृष्टा, स्वयं ज्योति,
अभिमन्यु की भाँति साहसी और निर्भीक मोती।
सीख हम द्वापर युग से लेकर,
नए युग को सार्थक करें,
उनके सद्‌गुणों को अपनाकर,
अपना जीवन हम चरितार्थ करें।

पुष्पा शर्मा, शिक्षिका

**हमारा देश**

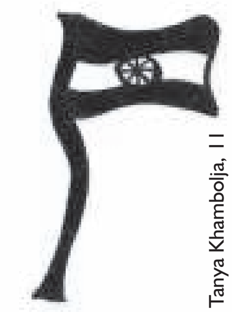
Tanya Khambolja, II

हमारा देश प्यारा है,
सबसे प्यारा हमारा देश,
हमारे देश में कई सारी जगहें,
जैसे महल, बगीचे,
हमारा देश प्यारा है,
हमारे देश में बहुत सारे जानवर हैं,
हमारे देश में बहुत सारी हरियाली है,
हमारे देश में बहुत सारे पर्वत हैं,
हमारा देश प्यारा है,

राही राठौर, कक्षा ४

**कर्ण की अभिलाषा**

Arushi Sethi, II

जब रण भूमि में खड़ा मैं आखिरी क्षण गिन रहा था,
कब आएगा वह असाध्य बाण कर्ण की मौत बन जाएगा।
छली इन्द्र को दान दिया मैंने प्रतिज्ञाबद्ध होकर
वही कवच-कुण्डल जिससे सुरक्षित था जीवन मेरा।

माँ ने सिसकती साँसों से त्याग कर दिया मेरा,
प्रारब्ध के हाथों डाल, नीर में बहा दिया।
निःशर्त प्रेम से धारण किया राधा ने मेरा,
दुर्योधन से मित्रता की माया में मैं बँध गया।

सूत पुत्र कहलाता मगर सताती क्षत्रिय भावना,
छल-कपट सहित पहुँचा सवाँरने आकांक्षा।
गुरु से छीन लूँगा ऐसी थी दोषित सोच मेरी,
बेहद पाया, असीमित खोया, विधि के जंजाल में।

मैं बलवान बुद्धिशाली, वज्र शक्तिधारी,
तब भी कहते सब मुझे कायर, लालची, दुष्कर्मकारी।
जल जाता मैं अपनी ही आग के अंगार में,
यह सोच कर कि कब नियति इठलाएगी साथ मेरे।

द्रौपदी तो अतुल्य थी, विवश था देखकर उसकी दृढ़ता,
समझ न सका मैं कभी भी क्यों उसने मुझे दुत्कारा।
अघोर छल था लाक्षागृह, पासे का खेल, चीरहरण
पर खड़ा रहा स्तब्ध, लाचार, चुप और बलहीन।
मैं अमर्ष, स्वार्थी, जल रहा था बैर की आग में,
आँखों में असमंजस का रोष, नफ़रत हृदय में।
जब माता आयी अपना पुत्र माँगने मुझसे,
ज्वाला बनकर प्रतिशोध की, लाली छा गई मन में।

अस्तित्व को दिया है अर्थ जिसने, उस नर को नहीं छोड़ूँगा
पाँच पुत्र तेरे रहेंगे सदा मैया, अचल प्रण है दानवीर का।
अहम् से भरा रथ ले गया मैं रण भूमि की ओर,
भीष्म, द्रोण नहीं मार सके, नैया पे उसकी डालने ज़ोर।

घोर अंधकार, प्रचण्ड हाहाकार मैंने है मचाया,
श्रापित था मैं, सब अर्थहीन, जब साथ विद्‌या ने छोड़ा।
अब कर लूँ लाख जतन मैं इस लज्जा को नहीं टाल सकता,
खड़ा सामने वह भयानक क्षण, चाहे असंख्य नीति ललकार।

सोचता हूँ-क्या मौत अब तू ज़रा शर्माएगी?
यह देह से मुक्ति दे, जल्द जकड़ ले जाएगी?
अंत समय हे प्रिय अनुज, शब्द हैं हैरान,
अनन्त, अपार, असीम प्रेम बह रहा तेरे द्वार।

क्षमा कर, शीश नमन करूँ मेरा हे वासुदेव
विश्वरुप की शरण में मोक्ष का मेरा ध्येय।
काश यह जीवन फिर से मैं जी पाता, ओ मैया,
तेरे आँचल से पोंछता आँसू, कुन्ती-पुत्र कहलाता।

राजल चकबर्ती, प्रधानाचार्या

### गलती

Asimanand Sahoo, 9

अगर मैंने एक गलती कर दी,
तो मैं उसे मान लूँगी ।
जो भी मैंने किया
उसे ठीक कर दूँगी ।
चाहे मुझे डाँट प े, मैं
बर्दाश्त कर लूँगी ।
मुझे माफ कर दो, कर दो, कर दो, कर दो ।
एक बार मैंने अपनी बहन का कार्ड बिगा दिया,
मुझे माफ कर दे मेरी बहन, मुझे माफ कर दे बहन
कर दे, कर दे, कर दे ।।
मैंने उसके लिए नया कार्ड बना दिया, उसने मुझे
माफ कर दिया, माफ कर दिया, माफ कर दिया ।
मैं बहुत खुश, खुश, खुश हुई ।।

रिचा मिश्रा, कक्षा ४

### मेरी दोस्त

Khushi Patawari, Skg

हम हैं सच्चे दोस्त ।
हम दोनों में सब कुछ मिलता है ,
हम दोनों खेल में एक जैसे
कभी वो जीते, कभी मैं जीतूँ ।।
जो मुझे पसंद वो, उसे पसंद
जब भी उसे मदद चाहिये मैं
उसे मदद करूँ, जब भी मुझे मदद
चाहिये वो मुझे मदद करे ।
जब भी मैं कुछ गलत करूँ
वो कहती मैं तेरी दोस्त नहीं हूँ,
थो ी देर बाद वो कहती- मैं तेरी दोस्त हूँ ।
मैं उसकी दोस्त, वो मेरी दोस्त
हम दोनों हैं सच्चे दोस्त ।।

रिचा मिश्रा, कक्षा ४

### घर

Ansh Kapasi, Skg

घर है मेरा प्यारा-प्यारा,
उसके अंदर वाले न्यारे ।
मेरा घर मुझे बचाता चोर से और
उसके अंदर मनाते हम दीवाली शोर से ।।
इसके अंदर टी.वी., देख खुश हो जाते ।
अगर ये घर टूट जाता तो, तो क्या कर पाते हम ?
ना टी.वी., ना खिलौना
ऐसी ज़िंदगी में मर जाते हम ।।

रुदित शाह, कक्षा ३

### दुनिया

Pankti Mashruwala, 9

मेरी दुनिया है प्यारी
है ये सबसे न्यारी।
लोग न इसे खराब करे,
ये ही हमारा लक्ष्य रहे।
क्यूँ गंदा करें इसका पानी,
क्या लगती नहीं हमें ये दुनिया प्यारी ?
हमारा घर यही है, हम न बरबाद करें इसे।
हम क्यों मारे पक्षी को,
क्या ये हम नहीं सोचे तो।
मत गंदा करो पानी को,
ये ही तो मैं बोलूँ हम सब को।।

रित्विक सिंह, कक्षा ४

**बारिश**

बारिश आई रिमझिम झिम ,
बूँदें टपकी रिमझिम झिम।
मोर नाचता बारिश में,
और बच्चे भीगे बारिश में
सबको खुशी मिलती है,
जब बारिश आती है।
बारिश आई रिमझिम झिम ,
बूँदें टपकी रिमझिम झिम।
बादल बरसे, बिजली कड़की
बारिश बरसी रिमझिम झिम ,
बूँदें टपकी रिमझिम झिम।
सावन आया फूल खिले
और मौसम फिर सुहाना बना।
बारिश आई रिमझिम झिम ,
बूँदें टपकी रिमझिम झिम।

Raina Kishor, 9

रिया तलवार, कक्षा ७

**होली है**

Manthan Grover, 11

होली आई! होली आई!
आकर रंगों की बौछार लाई।
मार्च में आती खुशियाँ लाती।
सब करते रंगों, पिचकारियों से तैयारी
खेलती खिलाती होली आई।
होली आई! होली आई!
रंग फैलाते, भाँग पीते,
होली एक ऐसा त्यौहार,
जहाँ मिल जाते हैं धर्म और व्यवहार।

रिया गुप्ता, ध्रुवा चौहान, कक्षा ७

**सिक्के के दो पहलू अच्छाई और बुराई**

समाज में कहीं है मानव तो कहीं है दानव।
सज्जन अनुकरण करे अहिंसा का,
दुर्जन करे हिंसा का।
सदाचारी समाज का गहना है,
दुराचारी एक कलंक।
जो न्याय करे दलितों से,
वे सदा विजय होते।
अन्याय पर चलने वाले
मुख देखे पराजय का।
दूर करे बुराइयों को ताकि देश करे उत्थान,
चलके राह पर अच्छाइयों की ही हम पाएँगे यश।
अपनी संस्कृति का हम करें आदर,
न किसी को करने दें निरादर।
फैलाएँ प्रकाश ज्ञान का,
करें दूर अंधकार अज्ञान का।
करें साक्षर सब को,
रहे न कोई निरक्षर।
तभी पहुँचेगा देश हमारा
ऊँचाइयों के शिखर पर।

Pankti Mashruwala, 9

रिया तलवार, कक्षा ७

**तितली**

Rajvi Agravat, 7

तितली आई, तितली आई,
रंग-बिरंगी तितली आई,
फूलों पर मंडराती तितली,
बच्चों के साथ खेलती तितली आई,
बच्चों को हँसाती तितली आई,
तितली आई, तितली आई,

रुश्वी गाँधी, कक्षा ४

**प्यारे-प्यारे फूल**

Ruchi Mashruwala, 1

प्यारे-प्यारे फूल खिले हैं,
जो मिलजुलकर साथ हमेशा रहते हैं,
प्यारे प्यारे फूल खिले हैं,
सारा जहाँ रोशन हुआ है,
प्यारे प्यारे फूलों से यह देश सुंदर दिखता है,
प्यारे प्यारे फूल हो जहाँ, खुशी होगी ज़रूर वहाँ,
इतने सुंदर रंग-बिरंगे फूल से यह देश रंग-बिरंगा दिखता है ,
तो बच्चों फूलों को कभी न तोड़ो,
बल्कि उनकी रक्षा करो।

रिया चौधरी, कक्षा ३

## भारत देश महान हैं

काली मिट्टी, गीली मिट्टी
भूरी मिट्टी, पीली मिट्टी
हर जगह मिट्टी ही मिट्टी
सारी मिट्टी को मिला दिया
तो पूरा हिन्दुस्तान है।
चाहे जो मंदिर में जाए,
जा मस्ज़िद में टेर लगाए।
गुरुद्वारे में सबद कीर्तन,
यहाँ के सब नर नारी गाए।
मानव को मानव प्यारा है,
मानव ही भगवान है,
भारत देश महान है।
रघुपति राघव राजा राम
कर्म करो और हो निष्काम
यही हमारा हिन्दुस्तान है,
भारत देश महान है।

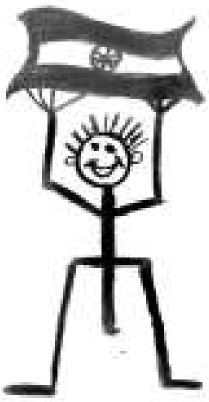
Tanya Khambolja, 11

रिया तलवार, कक्षा ७

## उलझन

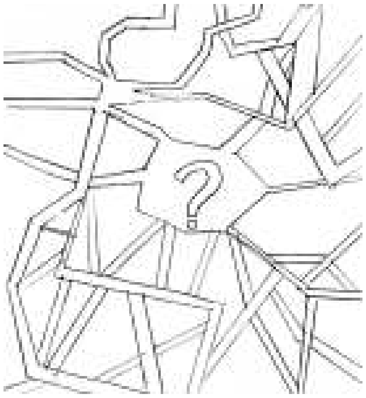
Sushant Sinha, 9

पापा कहते बनो डाक्टर माँ कहती इंजीनियर।
भैया कहते इससे अच्छा सीखो तुम कंप्यूटर।
चाचा कहते बनो प्रोफेसर,
चाची कहती अफसर।
दीदी कहती आगे चलकर बनो तुम कलेक्टर।
बाबा कहते फौज में जाकर जग में नाम कमाओ।
दादी कहती घर में रहकर ही उद्योग लगाओ।
सबकी अलग-अलग अभिलाषाएँ,
लेकिन मेरी मन की उलझन कोई समझ पाता।

रोहन शर्मा, कक्षा ३

## आतंकवाद

भारत में आतंकवाद ने फैलाया अपना पैर।
आम आदमी के जिन्दगी की नहीं रही खैर।।
राजनेता शहीदों की शहादत पर भी करते शक।
वोटों के लिए ऐसा करना समझते अपना हक।।

आतंकवादियों अगर मारना ही हो
तो इन भ्रष्ट नेताओं को मारो।
वोटों की राजनीति करने वाले
इन देशद्रोहियों से तारो।।

ये देशद्रोही हैं असल में,
भारत के नमक हराम।
जिस थाली में खाना,
उसी में छेद करना,
यही है इनका काम।।

Arushi Sethi, 11

हम कब तक इन जुल्मों को सहते रहेंगे।
इन भ्रष्टाचारियों की चिकनी चुपड़ी
बातों में फंसते रहेंगे।

समय आने पर इन देशद्रोहियों को
सबक सिखाने में है शान,
तभी हम गर्व से कह सकेंगे, मेरा भारत महान।

ऋचा झँवर, कक्षा ९

## भगवान

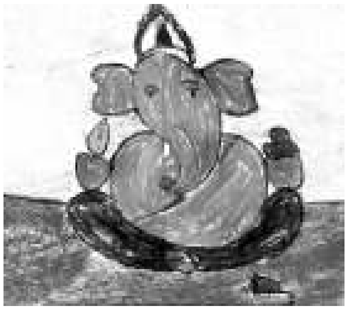
Khushi Patawari, Skg

प्यारे भगवान प्यारे भगवान, तो सारे अच्छे भगवान।
प्यारे भगवान प्यारे भगवान, सबकी मदद खूब करें।
हम तो उनकी आरती के प्यारे, भगवान प्यारे भगवान।
मैं भी भगवान बनना चाहूँ, सबकी मदद खूब करूँ।
प्यारे भगवान प्यारे भगवान, प्यारे भगवान प्यारे भगवान।

रुहान शाह, कक्षा ३

**जय भारत**

जय भारत, जय-जय हिंदुस्तान !
यह देश बना मेरा अभिमान।
हर ओर हुआ है इसका गान,
इसकी तो बढ़ती जाए शान।
जब कपिल ओर धोनी ने हमको,
विश्व कप जिताया था,
तब हर भारतवासी का सीना
गर्वित हो चौड़ाया था।
अब ओलंपिक में स्वर्ण दिला,
अभिनव ने शान बढ़ाई है।
कितने ही ऐसे नामों ने,
हर क्षेत्र में जीत दिलाई है।
तैनात खड़े जो सीमा पर,
उनसे दुश्मन थर्राते हैं।
अपनी सेना के दम पर ही,
हम चैन से सोने जाते हैं।
अपनी आज़ादी के दिन पर,
खुशियों के दीप जलाते हैं।
बलिदान दिया जिन वीरों ने,
उनको हम शीश नवाते हैं।
है लक्ष्य यही और भाव यही,
हर पल कोशिश यह करनी है।
इस देश के कोने-कोने में,
खुशियाँ ही खुशियाँ भरनी है।

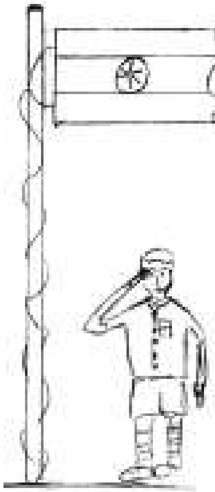

Anand Shah, 9

ऋषभ जैन, कक्षा ७

**पेड़**

Anand Shah, 9

आज कक्षा एक-गामा ने एक नाटक किया कि हमें जंगलों को नष्ट नहीं करना चाहिए, क्योंकि वे हमारे मित्र होते हैं, क्योंकि वे हवा शुद्ध करते हैं, और प्रदूषण कम करने में हमारी मदद भी करते हैं , और पेड़ हमें फल, सब्ज़ियाँ भी देते हैं, हमें पेड़ कभी नहीं काटने चाहिए, क्योंकि वह हमें बहुत सारी चीजें देते हैं, और हमें धूप में भी छाँव देते हैं ।

ऋषिकेश पारवानी, कक्षा ३

**किताब**

Vidhi Shah, 9

किताब किताब किताब
मेरी किताब , मेरी किताब ।
सब तुझे देखें और , हो जाए गुम ।
तुम मेरे साथ आती मेरे स्कूल में
मेरे काम आती English में
theme में और math में मैं पढ़ूँ
मैं तुझे पढ़ूँ और हो जाऊँ गुम
ओ मेरी किताब, ओ मेरी किताब ।

ऋत्विक देसाई, कक्षा ४

**दीवाली**

दीवाली में हमने मिठाई खाई
और बहुत मजा आई
दीवाली है सब का त्यौहार,
सब करें इसमें मजा

रॉकेट छोड़े, पटाखे फोड़े
और बम ज़बरदस्त फोड़े
दिवाली है अच्छा त्यौहार,
सब करें इसमें मज़ा ...

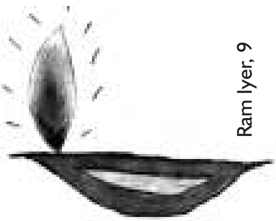

Ram Iyer, 9

सैम्यूल मैथ्यू, कक्षा ३

**सुभागी**

तुलसी महतो की बेटी सुभागी
थी बहुत ही भाग्यशाली।
करते थे सब प्यार उसी को
थी वह प्यारी तुलसी महतो को।
छोटी उम्र से ही थी चतुर,
खेती-बाड़ी करती और हर काम में थी निपुण।
पर उसका भाई रामू था विपरीत उसके,

था वह लापरवाह और था बड़ा उससे।
कर दी गई शादी सुभागी और रामू की
अचानक से आ पड़ी विपदा ऐसी कि
हो गई जल्द विधवा सुभागी
पर करती गई हर विपत्ति का सामना।
सुभागी का प्रेम माता-पिता के प्रति
पड़ता गया रामू को भारी
महतो की कोई बात न मानी
करता गया वह मनमानी
आखिर महतो को आया एक विचार
वह सुख कितना कठोर और दुःख कितना मंगलमय।
एक दिन रामू ने छेड़ी ऐसी बात
अलग होने की बात
माना सुभागी ने यह सब हुआ उसके कारण
और कह गई खुद अलग होने की बात।
गाँव-गाँव में सुभागी की तारीफ
यह इस जन्म की देवी, थी एक महान तारीफ।
आया महतो को एक दिन ज्वर
बुरी हालत की वजह से गए सबको छोड़
था सुभागी को सजनसिंह का ऋण चुकाना
करती गई वह मेहनत क्योंकि था उसे ऋण चुकाना।
आखिर माता हुई बीमार
कह गई एक आखरी इच्छा
अगले जन्म भी तुम ही मेरी कोख से जन्म लेना
और चल गई सुभागी को अकेला छोड़।
आखिर चुका दिया सुभागी ने ऋण
और जीत लिया सजनसिंह का विश्वास,
आखिर सजन सिंह ने मांगा अपने बेटे के लिए सुभागी का हाथ
फिर से मिल गया सुभागी को प्यार।

Pankti Mashruwala, 9

साक्षी वैद्य, कक्षा ८

**मेरी माँ**

Arushi Sethi, 11

मेरी माँ प्यारी है,
बहुत प्यार करती है,
सबका ध्यान रखती है।
कभी न झूठ, कभी न मारे वो,
सबसे सुन्दर पूरे शहर में है।
सबकी मदद करती है, और दूसरों का दुख समझती है।
मेरी माँ के दो बच्चे, मैं और मेरा भाई।
हमारी देखभाल रखती है।
घर का काम करती है ।
वह एक कक्षा में पढ़ाती है ।
मेरी माँ सबसे अच्छी है ।

सनत राजागोपालन, कक्षा ३

**घड़ी**

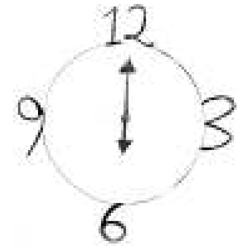


Sanyam Gandhi, 9

टिक-टिक-टिक-टिक ट्रिंग, उठने का समय हो गया ।
घड़ी में तीन काँटे होते। एक दिखाता घंटे तो दूसरा दिखाता
मिनिट और तीसरा दिखाता सेकेन्ड ।
घड़ी में होती है गिनती -एक, दो, तीन, चार।
अगर घड़ी न होती तो हम समय न देख पाते ।
कैसे पता होता कि बस-स्टॉप कब पहुँचना है।
बस छोड़ कर चली जाती, पता न चलता कब घर जाना या,
कब गृहकार्य कर लेना ।
घड़ी हमें सब कुछ बताती, कब पहुँचना है बस-स्टॉप, कब जाना है घर
कब लेना है गृहकार्य ।
टिक-टिक-टिक-टिक ट्रिंग सोने का समय हो गया ।

संचित सुग्गला, कक्षा ३

**हमारा देश**

हमारा देश सबसे निराला,
उत्तर में है हिमालय ऊँचा,
मुझे है मेरे देश से प्यार,

मुझे है हमारे देश से दुलार,
अनेक लोग अनेक भाषा,
पर हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा,
भारत है मेरे देश का नाम,
खेती है हमारा काम
इसलिए मेरा भारत महान
जय हिंद

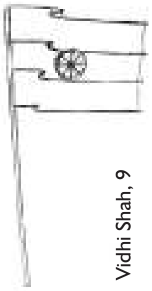

Vidhi Shah, 9

संजना परिख, कक्षा ४

**पेड़, पेड़, पेड़**

पेड़, पेड़, पेड़, पेड़
क्या मैं कुछ पूछूँ ?
कितना सुख देता है,
कभी नहीं दुख देता है,
छाया देता,
खाया है, तूने कुछ भी नहीं,
झाड़ियाँ काटें हम,
काँटे न लगे तेरे,
बारिश देता ,
कोशिश करता कि
दुनिया हरी हो,
पेड़ ओ पेड़
क्या मैं कुछ कहूँ ?

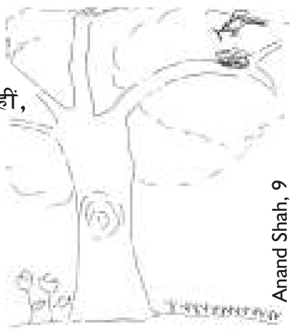

Anand Shah, 9

सना शेख, कक्षा ३

**नाचा बंदर**

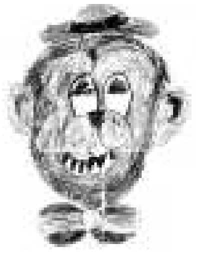

Kakul Rawat, Jkg

नाचा बंदर नाचा, कूद-कूद कर नाचा।
धूम मचा के नाचा, बार-बार वह नाचा।
पेड़ पर कूद-कूद कर वह नाचा, प्यार जगा के नाचा।
गाड़ी में बैठकर नाचा। खाते-खाते नाचा
कैसा है ये बंदर, जो हर समय नाचता।
यह बंदर हर समय नाचता, तो इसके साथ हम भी नाचेंगे।
भाग भाग कर नाचे, सब जगह हरियाली तो नाचो।
नाचो नाचो धूम मचाकर नाचो ।

संस्कृति जैन, कक्षा ४

**पेड़**

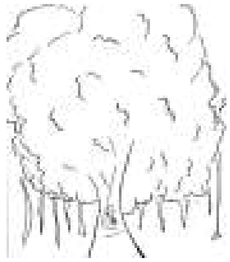

Asimanand Sahoo, 9

पेड़ है प्यारा, सबसे न्यारा।
तुम देते फूल-फल,
काम आते हो आज,
और आओगे कल।
तुम प्रकृति का हो एक बेटा, पर बुरी बात है, हम लोगों ने है तुम्हें काटा।
तुमने हमें कितना कुछ है बाँटा, पर हमने तुमको काटा इसलिए,
तुम्हारे राजा ने है हमको डाँटा।
जब तुम देते छाया, तब ऐसा लगता, जैसे माँ की माया।
पेड़ है प्यारा, सबसे न्यारा।

सावनी कोडिलकर, कक्षा ४

**जनक की सीता नहीं राम की सीता बन के दिखाओ**

Savni Kodilkar, 4

इन खाली पन्नों पर जब उकेरे
मैंने अपनी रामायण के चरित्र
जीवन की सभी स्मृतियाँ आ
गई मेरे सामने सचित्र,
जीवन की सभी घटनाएँ चलने
लगी भाँति चलचित्र।

विचारों के द्वंद्व में मन का तूफान समा गया,
दर्द का एक सैलाब मेरे दिल में आ गया।
पर इसी बहाने मुझे मेरा लक्ष्मण और जनक याद आ गया।

जीवन की नैया चलती है कई पात्रों के सहारे,
कुछ पात्र आपको एक दम दिल के करीब होते हैं।
मेरे जीवन का जनक आज एक दम अकेला है,
उसके पास आज कोई भी नहीं सीता है।
सीता तो गुम हो गई बस अपने कर्तव्यों में,
जनक कहता नहीं, बस करता है अपनी बेटी का इंतज़ार,
जिनको देखने वह जा नहीं पाती सालों साल।
अब आखिरी वक्त में उसकी जीवन की नैया है,
पत्नी व माँ के दायित्वों में बँध चुकी है इस तरह,
बेटी अपने दायित्वों को निभाओ,
जनक की सीता नहीं, राम की सीता बन के दिखाओ।
(मेरे पिता को समर्पित, जिन्होंने मुझे मानसिक शक्ति प्रदान की। वह मेरे जनक हैं।)

सीमा शर्मा, शिक्षिका

**वह किशोर**

Tanya Khambolja, 11

था सुकुमार कोमल किशोर,
था उसके अन्दर बड़ा ही जोश।
क्षण भर भी न घबराता था,
मुश्किल से न आँख चुराता था।
कठिनाई से भी लड़ जाता था,
आया एक दिन जब क्षण कठिन,
मृत्यु के जा पँहुचा अधीन।
अभिमन्यु चक्रव्यूह में जा पँहुचा,
उसने मुश्किल को न सोचा।
बस चक्रव्यूह में भिड़ गया किशोर,
मृत्यु सी सेना थी चारों ओर।
मन में जब उसने ठान लिया,
विश्वास का बंधन बाँध लिया।
लड़ने लगा सिंह की भाँति,
उसकी अद्भुत तेज थी कांति।
अरि की सेना को गिराने लगा,
उन सात महारथियों को तब ये लगा।
एक साथ मिलकर कर दें उसका अंत,
उनके लिए न था कोई नियम तंत्र।
सातों ने जब उसे घेर लिया,
साथ में मिलकर फिर ढेर किया।
इतिहास का काला दिन था वो,
अन्याय की जिस दिन थी जय हो।
आकाश भी जब रोया ज़ार-ज़ार,
वसुधा का हृदय हो गया बेहाल।

अपने जीवन में भी हम अभिमन्यु से क्यों न बन जाएँ।
मुश्किलों के साथ महारथियों को क्यों न धराशायी कर जाएँ।

जीवन है तो फिर अंत भी है,
तो क्यों न हम भी डट जाएँ।
अपने जीवन के अवसादों को,
क्यों न हँसकर पी जाएँ ?
हम क्यों जीवन से डर जाएँ ?

सीमा शर्मा, शिक्षिका

**कैसे रिश्ते**

Asimanand Sahoo, 9

अच्छे बुरे का ना ज्ञान मुझे,
बुरे-भले का ना भान मुझे!
तो सही गलत का क्या फैसला,
जब अपने-पराए का ना मान मुझे।
अच्छे बुरे का ना ज्ञान मुझे,
बुरे-भले का ना भान मुझे!
सपने हकीकत सब यहीं कहते,
दिन-रात रहती मुझी से मेरी टकरार।
फिर भी अच्छे बुरे का ना ज्ञान मुझे,
बुरे-भले का ना भान मुझे!
हम-तुम की कहानी में,
हर पल ताना-बाना बुनता मैं,
किसका साथ निभाता मैं ?
किसको पीछे छोड़ देता मैं ?
अच्छे बुरे का ना ज्ञान मुझे,
बुरे-भले का ना भान मुझे!
जीवन के चक्रव्यूह में फंसा
अंदर बाहर की भाग दौड़ में।
अच्छे बुरे का ना ज्ञान मुझे,
बुरे-भले का ना भान मुझे!

शचि बन्ठिया, कक्षा ७

**भीष्म की मनोस्थिति**

Tanya Khambolja, 11

ज़िन्दगी बहुत से रंग दिखाती है,
पर ऐसा भी रंग दिखाएगी,
कभी सोचा न था।

क्या ज़िन्दगी जीने के लिए हमेशा कूटनीति
के भरोसे चलना पड़ेगा या उससे बच कर निकलना पड़ेगा,
कभी सोचा न था।

अपने ही वंश की नींव को हिलाकर,
सच्चाई से मुँह मोड़ना पड़ेगा,
कभी सोचा न था।

रिश्तों में इतना बदलाव, इतना खिंचाव,
खोजना पड़ेगा, अपनी बात को रखने के लिए
इतना सोचना पड़ेगा,
कभी सोचा न था।

जिन लोगों के साथ ज़िन्दगी के अच्छे
व बुरे पल बाँटें थे, आज उनसे ही
अन्जानों जैसा व्यवहार करना पड़ेगा,
कभी सोचा न था।

डर-डर कर, या कहूँ फूँक-फूँक कर
ज़िन्दगी के इस पड़ाव पर कदम रखने पड़ेंगे,
कभी सोचा ना था।

आज विष्णु के विशाल रूप के दर्शन के बावजूद,
अपनी बेबसी पर रोना पड़ेगा,
कभी सोचा न था।

जीवन जीने के फलसफ़ों को खोजते-खोजते,
अपने को भूल जाना पड़ेगा,
लोगों की उपेक्षा का शिकार होना पड़ेगा,
कभी सोचा न था।

अपनी सच्चाई को साबित करने के लिए,
मौके का इन्तज़ार करना पड़ेगा,
अपनों से ही अविश्वास झेलना पड़ेगा,
कभी सोचा न था।

कभी जिनको संस्कारों व आदर्शवादिता का पाठ पढ़ाया,
उन्हें ही युध्द भूमि में ललकारना पड़ेगा,
कभी सोचा न था।
क्या यही जीवन है ?????

शैली मिश्रा, शिक्षिका

**मेरी धरती**

Asimanand Sahoo, 9

मेरी धरती, मेरी धरती
रंग-बिरंगी धरती ।
कितनी सुन्दर धरती हमारी
हरियाली लाती धरती ।।
बहुत सुन्दर है धरती हमारी ,
कितने सारे लोग है,
कितने सारे पशु ।
धरती को न बिगाड़ो,
ये धरती है ये हमारी ।
मेरी धरती, मेरी धरती ।।

शान्तनु मिश्रा, कक्षा ४

**owing mistake**

मुझसे एक गलती हुई,
जो वक्त आने पर पता चल गई ।
मैंने एक झूठ बोला, जब मैं छोटा था ।
मैंने अपने दीदी का सामान ले लिया
और छुपा दिया ।
जब पता चला तो मेरी मम्मी ने डाँटा,
और मैं सोया ।
मुझसे एक गलती हुई,
जो वक्त आने पर पता चला ।
मुझको ये पता चला कि,
हमें झूठ नहीं बोलना होगा ।
मुझसे एक गलती हुई,
जो वक्त आने पर पता चल गई ।

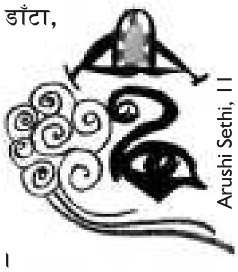

Arushi Sethi, 11

शान्तनु मिश्रा, कक्षा ४

**बारिश आई**

Manthan Grover, 11

छन---छन---छन----छन बारिश आई।
साथ में इन्द्रधनुष ले आई।
छम---छम---छम----छम मोर नाचे।
भोर समय पर मोर नाचे ।
छन---छन---छन----छन बारिश आई।
हरियाली को साथ में लाई,
बच्चों के मुँह पर खुशी लाई।
दड़क---दड़क---कर मेंढक नाचे।
छप---छप---छप----छप बच्चे नाचे ।
छन---छन---छन----छन बारिश आई।

शिल्प कंसारा, कक्षा ४

## सबसे प्यारे पेड़

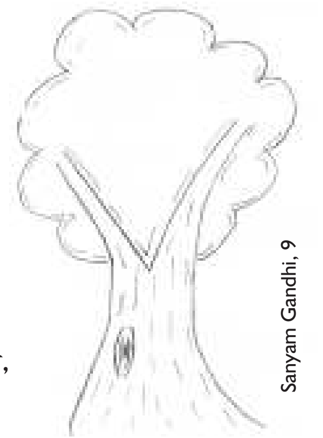
Sanyam Gandhi, 9

सबसे प्यारा,
सबसे न्यारा,
क्या है वह कहो,
प्यारे पेड़ हैं वो।
सबसे लंबे,
जैसे खंबे,
क्या है वह कहो,
लंबे पेड़ हैं वो।
हरी दुनिया बनाते हैं वो,
सबको फल देते हैं वो,
क्या है वह कहो,
हरे पेड़ हैं वो।
सबसे बड्डे,
पेड़ पेड़ में गड्ढे
क्या है वह कहो,
बड़े पेड़ हैं वो।
चिड़िया का घर,
उसके शरीर पर
क्या है वह कहो,
बड़े पेड़ हैं वो।
पीले पत्ते गिरते हैं
फिर सूख के मरते हैं वो,
क्या है वह कहो,
पेड़ के पत्ते हैं वो।
पेड़ मत काटो,
ये बात बाँटो,
कृपा करो, पेड़ उगाओ।

शिवम चोलिन, कक्षा ६

## स्वाइन फ्लू

Sushant Sinha, 9

स्वाइन फ्लू, स्वाइन फ्लू,
सब हो गए घर में छू।
जाने कहाँ से आई ये बीमारी
जिसके आगे पूरी इंडिया हारी,
लाए इन्हें विदेशी लोग
पूरे शरीर में फैलाती है रोग
मम्मी पिलाने लगी कड़वे-कड़वे जूस
खाना खिलाने लगी ठूँस-ठूँस।
कभी कहती है खाकर इम्यूनिटी बढ़ाओ
कभी कहती है खाकर तोंद न फुलाओ।
इसमें आदमी हो जाता है कमज़ोर
और फीवर हो जाता है फोर।
निकलने लगेगा नाक में से पानी,
आपको याद आ जाएगी अपनी नानी
रखनी पड़ेगी बहुत तकेदारी,
नहीं तो फैल जाएगी ये बीमारी।

शुभांगिनी देवी झाला, कक्षा ५

## महाभारत नहीं -----महान भारत बने

वो शूरवीरों की टोली थी,
जिसे कुरुक्षेत्र का नाम दिया।
वो धर्म युद्ध का प्रतीक बना,
श्री कृष्ण ने जिसे अंजाम दिया।।

वो स्वाभिमान की गाथा थी,
जहाँ द्रौपदी का वस्त्र हरण हुआ।
जहाँ पांडव कौरव झगड़ पड़े,
नव भारत का जहाँ गठन हुआ।।

इस धर्म अधर्म की लड़ाई में,
कई महावीर लहूलुहान हुए।
अभिमन्यु, करण, द्रोण और भीष्म,
जैसे महायोद्धा बलिदान हुए।।

Tanya Khambolja, 11

जो कुछ होना था वो हुआ,
पर तुमने हमसे क्या सीखा।
क्यों भाई-भाई लड़ते हैं,
सुख शान्ति का क्यों अंत हुआ।।

जब कर्म वो सर्व धर्म हुआ,
जिसने पूरा इतिहास लिखा।
आओ ऐसा कर्म करें,
और स्वयं ऐसा भविष्य रचें।।
जहाँ अपने पराये की दीवार ढले,
जहाँ प्यार, आदर और विश्वास पले।
सही और गलत की परख हो,
महाभारत नहीं ------ महान भारत बने।।

श्वेता बख्शी, शिक्षिका

## गुड्डा-गुड्डी का नाच।

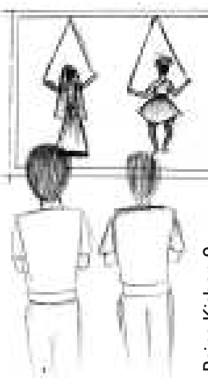

Raina Kishor, 9

गुड्डा-गुड्डी नाचे गाएँ, कूद-कूद कर नाच दिखाएँ।
आओ बच्चों तुम भी देखो, मिलकर तुम भी नाचो-गाओ।

बच्चे दौड़े-दौड़े आए, गुड्डा-गुड्डी घबराएँ,
आगे गुड्डा-गुड्डी दौड़े, पीछे बच्चें भागे जाएँ।

गुड्डा बेचारा गिरा नदी में, गुड्डी रानी घबराई।
गुड्डे ने रस्सी पकड़ी, बच्चे रस्सी खीचें जाएँ।

गुड्डा निकल बाहर आया, बच्चों ने धन्यवाद पाया।
गुड्डा-गुड्डी, बच्चें मिलकर नाचे, गाएँ, धूम मचाएँ।

सिमरन पटावरी, कक्षा ४

## मेरा सपना

Sushant Sinha, 9

एक दिन मुझे सपना आया कि मैं परियों के देश में हूँ। वहाँ पेड़ों पर चॉकलेट उग रही है। मैंने सोचा कि क्यों न एक चांकलेट चख ली जाए। जब मैंने चखी तब वह इतनी टेस्टी थी, कि पूछो मत। तभी वहाँ मैंने एक परी देखी, वह बहुत सुंदर थी। जब मैं उसके पास जाने लगी तभी मैं जाग उठी और देखा तो मेरी माँ मुझ पर चिल्ला रही थी क्योंकि मैं स्कूल के लिए लेट हो गई थी।

सिमरन पटावरी, कक्षा ४

## रिम-झिम बादल

Asimanand Sahoo, 9

बचपन मेरा प्यारा बचपन, जिसमें बादल की है हलचल,
छोटे-मोटे, काले-गोरे, फिर टिप-टिप बरसे रिम-झिम करते।

गरमी को भगाते बादल, खेतों को लहराते बादल,
धरती के सुपुत्र बादल, उसकी प्यास बुझाते बादल।

टिप-टिप हैं बरसते बादल, सदा खुशी फैलाते बादल,
नीले रंग के प्यारे बादल, सदा खुशी फैलाते बादल।

सिया पटेल, कक्षा ४

## मानू की दुनिया

Anand Shah, 9

एक बार एक आदमी था । उसे घूमने में बहुत मज़ा आता था । उसका नाम था मानू । मानू ने एक बार दुनिया की सवारी लेने की सोची । वह एक घोड़ा लेकर चल पड़ा। वह राजस्थान में एक छोटे से गाँव में रहता था । जब वह पाकिस्तान पहुँचा, उसे बहुत सारे पेड़ दिखे। उसे बहुत अच्छा लगा, पर जब उसे घूमना था, तब एक आदमी बोला- उधर मत जाना । वहाँ पर एक युद्ध हो रहा है । मानू एकदम डरा और वहाँ से जाने लगा। जब वह चाइना गया तो उसने बहुत कुछ खरीदा । रात होने लगी, उसने सोचा कि- वह रात को इधर ही रुक जाएगा । वह एक होटल में रुक गया और वहाँ सो गया । सुबह में पैसे देकर म्याँमार जाने लगा । म्याँमार में उसने बहुत घूमा, पर वह थक गया और हिन्दुस्तान वापस आ गया तथा उसने लोगों को अपनी कहानी बताई ।

सौम्या वर्दे, कक्षा ४

## owing mistake

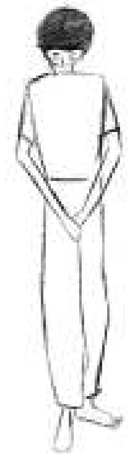

Vidhi Shah, 9

मैंने मेरा काम न समेटा,
वक्त आने पर मुझे कुछ नहीं मिलता ।
मेरा दिमाग घूमने लगता,
आखिर मैंने कहाँ रखा ?
मेरी मम्मी ने मुझे डाँटा,
मैंने बहुत ढूँढा,
पर मुझ नहीं मिला ।
मैंने मेरे पापा से पूछा-
मेरे पापा ने मुझे माफ कर दिया,
और मुझे नया फेवीस्टिक ला दिया ।

सौम्या वर्दे, कक्षा ४

## जीवन एक संग्राम

Arushi Sethi, 11

आओ सुनें एक बीती कहानी,
है सबकी वह आनी जानी।
था वह युग स्वर्ण समान
पर उसमें भी आ गया अभिमान।।
आ गया अभिमान
मिट गया मान
जिसने खोया
क्या उसने पुनः पाया सम्मान ?
इक दुष्कर्म से मिटा सम्मान
वहीं इक सुकर्म से मिला सम्मान।
और वही बन गया
भारत का स्वाभिमान।।
पर कुरुक्षेत्र तो अभी भी है,
वही दुर्योधन, और अर्जुन भी है।
वहीं कृष्ण सा सारथी भी है,
वहीं शकुनि सा महारथी भी है।।
करना है फैसला अब हमें,
कृष्ण का हाथ, या दुर्योधन का साथ।
तभी थमेगा, तभी रुकेगा
जीवन का यह संग्राम।।
पर जीवन, पर जीवन ही तो है संग्राम
अवश्य लड़ेंगे, नहीं डरेंगे,
कुछ भीष्म सा त्याग करेंगे,
कुछ कर्ण सा दान करेंगे,
वहीं कृष्ण सा साथ करेंगे,
तब पूरा होगा ये अभियान।।
जीवन एक संग्राम।।

सोनम तिवारी, शिक्षिका

## पेड़

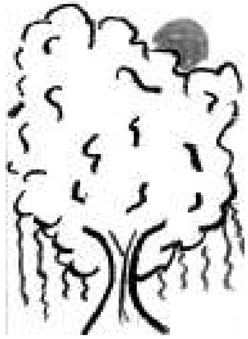

Asimanand Sahoo, 9

हरा-हरा है तू, छाया देता है तू।
तुम हमें देते सुख, हम तुम्हें देते दुख।
तुम्हारे पत्ते झड़ जाते, पतझड़ के मौसम में।
तुम दिखते हो बहुत सुंदर spring के मौसम में।
हरा-हरा है तू, छाया देता है तू।

श्रेयान गुप्ता, कक्षा ४

## तितली

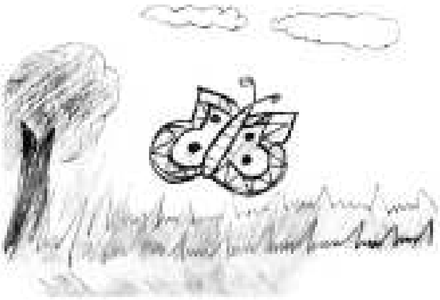

Alankrita Ganguly, 5

देखो-देखो तितली आई
कितनी सुंदर दिखती है
अलग-अलग रंग की है तितली
मुझे बहुत पसंद हैं तितलियाँ
फूलों में से चूसती हैं रस
मुझे तितली की कहानी पसंद है
रंग-बिरंगी रंगीन तितली है
देखो-देखो तितली आई।

स्टेफी गामित, कक्षा ३

## वह युध्द नहीं मनुष्यता पर थी चुनौती

Tanya Khambolja, 11

वह युध्द नहीं मनुष्यता पर थी चुनौती,
जहाँ सिर्फ न रिश्तों में थी दरार,
बल्कि टुकड़े-टुकड़े होकर बिखर चुकी थी मर्यादा,
धर्म का हुआ था खिलवाड़,
जिसके लिए दोनों पक्ष थे जिम्मेदार,
पांडव कुछ कम, कौरव कुछ ज्यादा।

वह युध्द नहीं मनुष्यता पर थी चुनौती,
सिंहासन की लालसा में,
हो रहे थे षड़यंत्र घिनौने,
खेल-खेल में लगा दी
धर्मराज ने अपनी अर्धांगिनी को दाँव,
भरी राजसभा में हुआ,
स्त्री का अपमान।

वह युध्द नहीं मनुष्यता पर थी चुनौती,
जहाँ प्रतिशोध की अग्नि में जल चुका था विवेक,
रणभूमि में हो रहा था अपनों का रक्तपात,
हर क्षण मृत्यु दिखा रही थी अपना तांडव,
न्याय-अन्याय का न था कोई विचार,
यह अजब युध्द था, न थी किसी की भी जय,
दोनों पक्षों को खोना ही खोना था।

वह युध्द नहीं मनुष्यता पर थी चुनौती,
अंधों से शोभित था राज्य का सिंहासन,
जीत रहा था अधिकारों का अंधापन,
हो गया था बुध्दि का हनन,
लग चुका था प्रश्न चिह्न,
न्याय और धर्म की पराकाष्ठा को।
वह युध्द नहीं मनुष्यता पर थी चुनौती।।

सुदेशना घोष, शिक्षिका

## तितली

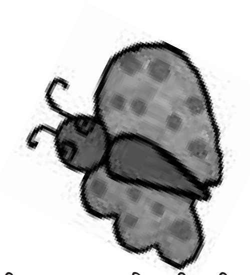

Krishna Kumar, 1

तितली उड़ी इधर-उधर, तितली उड़ी यहाँ-वहाँ।
सारी जगह उड़ती चली, रंग-बिरंगी यहाँ-वहाँ।
पंख हिलाती रंग-बिरंगी, पीती रस फूलों के।
सब देखे घूर-घूर के, फूलों पे मँडराती।
न पता कहाँ उड़ी, तितली उड़ी इधर-वहाँ।

सुष्मिता दास शर्मा, कक्षा ३

## माता-पिता की छत्र छाया

Raina Kishor, 9

माता-पिता की छत्र छाया में रह कर
देखो उनसे प्यार के दो मीठे बोल बोलकर,
माता पिता के चल बसने से,
क्या होगा पवित्र गंगा जल में स्नान करने पर?

जो देते हैं तुम्हें मन से सच्चा आशीर्वाद ,
फिर तुम्हें क्यों नही आती है उनकी याद,
करते क्यों नहीं तुम उनका आदर,
क्या फायदा जब तुम उनकी तस्वीर को करो नमन हर क्षण हर पल?

जीवन के अंधकार में जो रहते थे साथ तुम्हारे,
जिन माँ-बाप ने बढ़ाया था हाथ,
उन्हीं का साथ छोड़ा था तुम्हारे अभिमान ने,
कोशिश करो हज़ार वह साथ नहीं लौटेगा,
दीवार पर टाँगकर फिर तस्वीर क्या फायदा होगा तुम्हारा?

माता-पिता की सेवा करना सच्चा धर्म कहलाता है
क्योंकि भाग्यशाली होती है वो संतान जिसे माता-पिता का प्यार मिलता है।

जो लहरें है यह प्रेम की वापस नहीं लौटेगीं
उस यादों की लहरों को एकत्र करने से क्या फायदा?

माँ बाप के आखिरी पलों में उनका मन शांत रखो
पतझड़ की वेला को वसंत के रंगों से भरो,
जब मिल जाएंगे उनके शरीर पंचभूतों में,
उन अस्थियों को गंगा में बहा के क्या फायदा?

श्रवण कुमार की तरह बनो अपने माँ-बाप की लाठी बनकर,
जाओ सारे तीर्थ यात्राओं पर उनका हाथ पकड़कर ,
मातृ देवो भवः पितृ देवो भवः संसार का सबसे बड़ा सत्य है,
उसके पश्चात राम नाम लेकर क्या फायदा?

पैसे से कुछ भी मिल सकता है, माँ बाप नहीं मिलेंगे,
नहीं लौटेगा उनका प्यार , वह संस्कार नहीं मिलेंगे,
फिर लाखों कमाने से क्या फायदा?

माँ बाप जैसा प्यार कहीं नहीं मिलेगा,
फिर उधार का प्रेम पाकर आँसू बहाने से क्या फायदा?
जिसके शीश पर हाथ पिता का और माता की आँचल छाया,
उसका जीवन सागर मंथन में, भाग्य सदैव अमृत ही आया।

स्वाति राजा, कक्षा ९

**ब्रह्मलोक**

M S Shreyas, 6

पृथ्वी पे जब साल बीत रहे, ब्रह्मलोक में दिन गुज़र रहे।
ब्रह्मलोक में रहते हैं लोग, जो हो भगवान जैसे।
कौन जाने कहाँ से आते शैतान।
मन में जो प्रश्न आते हैं, वो आते हैं ब्रह्मलोक से।
सोचते रहना - सोचते रहना मैं भी सोच रही हूँ,
क्या वहाँ लोग रहते जैसे मैं हूँ?

तनिशा टेकरीवाल, कक्षा ३

**परिवार**

Raina Kishor, 9

पूछो मेरा परिवार कौन?, मेरा परिवार पूरा संसार,
पूछो मेरे माता-पिता कौन?, मेरे माता-पिता भगवान।

पूछो मेरे भाई-बहन कौन?, मेरे भाई-बहन पूरा संसार,
पूछो मेरा देश कौन?, मेरा देश धरती माँ।

पूछो मेरा घर कौन?, मेरा घर धरती माँ,
इस दुनिया में सब मेरे भाई-बहन, माता-पिता, घर-देश और परिवार है।

उदितांशी कुमार, कक्षा ४

**मेरा देश**

मेरा देश महान है ,
सबसे ऊँचा नाम है।
पहाड़ों की चोटी पर,
इंसान रहते पार हैं।।
हमारे देश में बहुत लोग,
सब मिलजुल कर रहते हैं।
सब एक दूसरे को प्यार करें,
यह हमारा काम।।
मिलजुल कर काम करें,
तो ऊँचा होगा हमारा नाम,
कुछ लोग तो चलें पार,
लड़ाई ना करें बारबार,
मेरा देश महान है,
सबसे ऊँचा नाम है,
कभी न झगड़ें कभी न हारें,
मेहनत से हम काम करें।
देश का ऊँचा नाम करें,
झूठ न बोले सच कहें।।
मेरा देश महान है, सबसे ऊँचा नाम है।

Khushi Patawari, Skg

वर्धन खारा, कक्षा ३

## मेरी माँ

Preksha Patel, 4

मेरी माँ है प्यारी-प्यारी
सबका ख्याल रखती है।
सबके लिए खाना बनाती है,
मेरी माँ है प्यारी-प्यारी।
हम सबको तोहफे दिलाती,
हम सबको प्यार करती।
उन्होंने ही हमको बड़ा किया,
मेरी माँ है प्यारी-प्यारी।

विश्रुति रेवतकर, कक्षा ३

## पेड़

Laxya Kalra, Skg

पेड़, पेड़, पेड़,
पेड़ हमारे दोस्त हैं,
छाँव, फल, फूल सब देते हमें,
इसे कभी न काटना,
वरना प्रदूषण फैलेगा,
उन्हें उगाओ, लाइफ बनाओ।
जब पेड़ हो हर जगह,
पेड़ों को लगा के बोल,
सीटी बजा के बोल,
सीटी बजा के बोल,
पेड़ लगाओ।

विश्रुति रेवतकर, कक्षा ३

## मोर

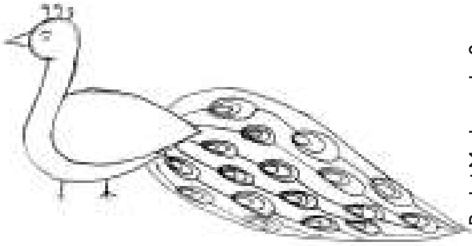
Pankti Mashruwala, 9

मोर हैं कितने रंग बिरंगे,
हमको इतने प्यारे लगते।
जब होती बारिश,
वह नाचने लग जाते।।
मेरे घर हैं आते-जाते,
टेहु-टेहु करते हैं।
मुझे पसंद है मोर,
मोर हैं कितने रंग-बिरंगे।।

विश्रुति रेवतकर, कक्षा ३

## होली

Asimanand Sahoo, 9

होली आई, होली आई
रंगबिरंगी होली आई
सबके मुँह पर पानी लाई
पिचकारी लाए,
पानी भराए,
दोस्त के घर मस्ती करके आए,
होली आई, होली आई
रंगबिरंगी खुशियाँ लाई

यश खुराना, कक्षा ३

**क्या वो छोड़ेगा??**

Shruja Pathak, Chiti Arvind, 11

जो भी मिला अब तक खुशी या गम
या यूँ कहें कि सिर्फ गम ही गम
हँसी में भी आँसू, खुशी के पल है कितने कम।

लोगों को देखा, जानवरों को देखा, यहाँ तक कि पक्षियों को भी देखा,
कि इंसानों से ज्यादा समझदारी, ममता उनमें होती है।

वो देख कर अपने आप यह एहसास हुआ कि कोई नहीं है,
मेरा कोई नहीं है।

पढ़ा जब कर्ण के बारे में तो सोचा कि वो तो कितना योग्य व्यक्ति था।
मैं तो कुछ भी नहीं, कोई खूबी नहीं मुझमें,
फर्क इतना है कि उसे छोड़ दिया गया था
पैदा होते ही, जब कि मैं रही हर पल उसी माहौल में,
जहाँ हर पल, हर समय एक उपेक्षा के साथ रहना पड़ा,
हर पल एक नई नफरत, नया गुस्सा, नया इलज़ाम सहना पड़ा।
फिर भी एक एक कदम उठाया, उस बनाने वाले की मर्ज़ी समझ कर,
सोचा सफर कितना ही लंबा क्यों न हो, मंजिल तो जरूर मिलती है।

क्योंकि कहा है उसने कि सहन के बाहर कष्टों में वो कभी नहीं छोड़ेगा,
सब ही छोड़ देंगे---
लेकिन क्या वो छोड़ेगा????

योगिता शर्मा, शिक्षिका

**भगवान की कहानियाँ**

Arushi Sethi, 11

जब भगवान उदास थे, भगवान इंसानों से परेशान थे। कभी कोई बुलाता तो कभी कोई। किसी के माता-पिता मर गए तो किसी को पैसे चाहिए। तभी नारद मुनि आ पहुँचे उन्होंने कहा- भगवान क्या बात है? क्यों परेशान हो? तो भगवान ने कहा कि- मैं इंसानों से परेशान हूँ। सब लोग मुझे पुकार रहे होते हैं। मुझे चैन से जीना है, मैं क्या करूँ? तब नारद मुनि ने बताया- आप जाकर जंगल में कहीं छुप जाओ। भगवान वहाँ चले गए लेकिन दो-तीन दिन के बाद वापस परेशान हो गए। तो नारद मुनि ने कहा कि आप जाकर माउन्ट एवरेस्ट की चोटी पर एक गुफा है, आप वहाँ जाकर छुप जाओ लो भगवान उधर भी चले गए लेकिन वहाँ भी पाँच-छः दिन के बाद इंसान वहाँ पर भी पहुँच गए। इसबार नारद मुनि ने थोडा सोचकर कहा कि- आप जाकर इंसानो के मन के अंदर छिप जाओ तो भगवान वहाँ जाकर छिप गए। अब ये इंसान तो था बेवकूफ, उसने सारी दुनिया ढूँढ डाली लेकिन उसने अपने मन के अंदर नहीं ढूँढा।

इस कहानी का मोरल है कि- भगवान हमारे अंदर ही है और हमें दूसरों की गलतियाँ नहीं निकालनी चाहिए, पहले अपने आपको सुधारना चाहिए।

यौरिक शाह, कक्षा ४